फार्म एन फूड

1 अप्रैल 2020 ■ ₹ 15

जमीन में यकीन, यकीन में धन

तालाब की मिट्टी से बढ़ती है पैदावार

ग्वार की खेती से ऐसे लें फायदा

किसान ने खेती में जमाई धाक

सेहतमंद रखे अंकुरित अनाज

सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

बागानों में निराईगुड़ाई के लिए इस्तेमाल करें कल्टीवेटर

सुखी जीवन संतुष्ट परिवार समृद्ध घर की मार्गदर्शक पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 119, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880,
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

संपादकीय

आप के लिए

सरकारी आंकड़े, जिन्हें मोदी सरकार चुनावी दिनों में रोक रही थी, बताते हैं कि पिछले 15 सालों में औरतों की काम में भागीदारी आधी रह गई है. गांवों में पिछले 6 सालों में 2 से 8 करोड़ औरतों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा है.

यह तब है जब घरों में बच्चे कम हैं और औरतों को अब बच्चे पालने में मुसीबत कम होती है. घरों में अब सास या मां भी काफी तंदुरुस्त रहती हैं कि वह पोतेनाती को पालने में हाथ बंटा सके, पर फिर भी औरतें काम पर नहीं जा पा रहीं.

इस की एक वजह तो यह है कि पिछले सालों में नौकरियों में एकदम कमी आई है. सरकार की नीतियां ही ऐसी हैं कि न कारखाना लगाना आसान है, न दुकान. खेती में फसल अच्छी हो तो दाम नहीं मिलता और जब दाम बढ़ते हैं तो उपज कम होती है, इसलिए नई नौकरियां ही नहीं निकल रहीं.

अगर देश का काम चल रहा है तो इसलिए कि सरकारी नौकरियों में लोग भरपूर कमा रहे हैं. वहां वेतन भी है, रिश्वत भी. वहां पैसा जम कर बंटता है और खैरात में कुछ बेकार बैठे लोगों के हाथों में आ जाता है. भगवा गमछेधारी आजकल पैदल नहीं चलते, शानदार मोटरबाइक पर चलते हैं, पर हैं बेरोजगार. उन की कमाई का एक बड़ा हिस्सा जबरन चंदे से आता है पर इसे नौकरी तो नहीं कह सकते. देशभर में जो झगड़े बढ़ रहे हैं उस के पीछे बेरोजगारी है.

लड़कियों की पढ़ाई अब लड़कों के बराबर सी होने लगी है, साल 2011-12 से 2017-18 तक गिनती बढ़ी है पर उतनी नहीं जितनी ज्यादा लड़कियां पढ़ कर आ गई हैं. आज हर घर में 2-3 बच्चे ही हैं और लड़कियां भी बराबर का काम कर सकती हैं. पर न तो उन्हें घर से बाहर काम मिलता है और न ही अपने बदन के बचाव का भरोसा है.

लड़कियों का काम देश की माली हालत में बढ़ोतरी के लिए बहुत जरूरी है. जो देश लड़कियों को बराबर का काम का मौका नहीं देगा, वह पिछड़ जाएगा. वहां औरतें फिर धर्म के नाम पर समय और पैसा बरबाद करेंगी या फिर ह्वाट्सएप जैसे फालतू कामों पर बेकार करेंगी. सब का साथ सब का विकास में औरतों का विकास कहां है, ढूंढ़ना होगा.

इस में जो...

फार्म एंड फूड 1 अप्रैल, 2020

तालाब की मिट्टी से बढ़ती है खेत की पैदावार

तालाब का पानी तो खेतों में सिंचाई के काम आता ही है, उस की मिट्टी भी खेत की पैदावार को बढ़ा सकती है, लेकिन इस के लिए जानकारी जरूरी है.

6 बागानों में निराईगुड़ाई के लिए इस्तेमाल करें कल्टीवेटर
7 मुट्ठी में मौसम की जानकारी
8 सब्जियों की संकर किस्में
10 सदाबहार है गेंदे की खेती
11 सूखे फूलों से सजावट
12 ग्वार की खेती से ऐसे लें फायदा
15 खबरें खेतखलिहानों की
22 सवाल किसानों के, खतोकिताबत
23 फायदेमंद भिंडी
24 खेती की जमीन में सूक्ष्म पोषक तत्त्वों का रखें ध्यान
26 जायकेदार करौंदा की खेती
28 ज्वार व बाजरे की फसल को कीड़ों से बचाएं
30 नौजवान किसान ने खेती में जमाई धाक
32 अप्रैल महीने के जरूरी काम
33 अंकुरित अनाज सेहत को रखे दुरुस्त

कुछ कहती हैं तसवीरें

34

फूल माहौल को ही नहीं महकाते हैं, बल्कि इन की खेती और कारोबार करने वालों की जिंदगी को भी ये खुशबू से भर देते हैं.

फार्म एंड फूड
जमीन में खेती, खेती में धन
1 अप्रैल 2020, अंक: 315
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ
दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888. एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264. टोल फ्री नंबर : 18001038880 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

तालाब की मिट्टी से बढ़ती है खेत की पैदावार

* भानु प्रकाश राणा

दुनियाभर में 60 तरह की मिट्टी पाई जाती है, जिस में से 46 तरह की मिट्टी भारत में पाई जाती है. उन मिट्टियों में से कुछ ही तरह की मिट्टी में खेती से अच्छी पैदावार ली जा सकती है. कुछ तरह की मिट्टी में सुधार कर के भी उस की पैदावार कूवत बढ़ाई जा सकती है.

अकसर देखा गया है कि उत्पादन को बढ़ाने के लिए किसान अपने खेत में तरहतरह की खादों का प्रयोग करते हैं. सब से ज्यादा कैमिकल खादों का प्रयोग किया जा रहा है. इस के चलते मिट्टी की उर्वरता कूवत काफी प्रभावित हुई है. मांग के अनुरूप जैविक उर्वरक उपलब्ध न होने के चलते हम अपने खेतों में देशी जैविक खाद नहीं डाल पा रहे हैं.

आज हम कृषि की उन्नत तकनीकों के चलते खेत की पैदावार बढ़ाने में काफी हद तक कामयाब हुए हैं. हम खाद्यान्न के मामले में भी आज आत्मनिर्भर हो गए हैं. दलहन उत्पादन के क्षेत्र में भी भारत ने लगभग आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है.

मिट्टी से अच्छी पैदावार

मिट्टी में 16 तरह के पोषक तत्त्व पाए जाते हैं. इन्हीं पोषक तत्त्वों के जरीए ही जमीन में उगाए गए पेड़पौधे अपनी खुराक लेते हैं. आज के समय में किसान अपने खेतों में कीट व बीमारी का प्रकोप रोकने के लिए फसल पैदावार बढ़ाने के लिए कृषि रसायनों का भी इस्तेमाल करता है, जिस के चलते खेत की मिट्टी में पोषक तत्त्वों की कमी हो जाती है.

खेत की मिट्टी में पोषक तत्त्वों की कमी न हो, इस के लिए अनेक तरीके अपनाए जाते हैं. इन में अनेक जैविक तरीके भी हैं, जो खेत की मिट्टी में जैविक क्षमता को बढ़ाते हैं.

इसी संदर्भ में डाक्टर आरएस सेंगर, कृषि विशेषज्ञ (सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ) ने बताया कि गांवदेहात में जो तालाब होते हैं, जिन्हें इलाकाई बोली में पोखर या जोहड़ भी कहा जाता है. अगर उन तालाबों की सड़ी मिट्टी को खेत में डाला जाए तो खेत की मिट्टी उपजाऊ बनती है.

गांवदेहात के जोहड़ या तालाब के पानी में पशुओं का गोबर और मूत्र वगैरह मिलते रहते हैं, जो फसल पैदावार बढ़ाने में सहायक होते हैं.

उस में अनेक ऐसे तत्त्व मौजूद होते हैं, जो फसल पैदावार बढ़ाने में मददगार होते हैं.

गरमी के मौसम में जब तालाब सूख जाते हैं, उस समय तालाब से मिट्टी निकाल कर खेत में डालनी चाहिए. इस मिट्टी को तालाब से निकाल कर रख भी सकते हैं और आगे कभी भी खेत में इस्तेमाल कर सकते हैं. यह मिट्टी पूरी तरह से जैविक होती है.

ऐसी मिट्टी जो कि काली चिकनी मिट्टी होती है, में कई प्रकार के जीवाणु मौजूद रहते हैं और मिट्टी की उपजाऊ ताकत को बढ़ाते हैं और उस में मौजूद पोषक तत्त्व पौधों को आसानी से मिल जाते हैं.

डाक्टर आरएस सेंगर ने बताया कि तालाब की सड़ी मिट्टी से उस में मौजूद जीवाश्म में बढ़वार होती है, जिस से खेत की मिट्टी की उर्वरता में सुधार होने के साथ ही भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में आई हुई गिरावट में भी विशेष सुधार देखा गया है. 1 ग्राम मिट्टी में 4 से 30 खरब जीवाणु व दूसरे सूक्ष्मजीव हो सकते हैं, जो मिट्टी ताप को भी नियंत्रित रखती है.

पुराने तालाब की सड़ी मिट्टी में 8 फीसदी नाइट्रोजन और 3 फीसदी सुपर फास्फेट पाया जाता है. 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर की दर से इस का उपयोग खेत में किया जा सकता है. तालाब की मिट्टी में पोषक तत्त्वों की उपलब्धता खेत में 2 से 3 सालों तक बनी रहती है.

खेती में जो फायदा तालाब की सड़ी हुई मिट्टी से संभव है, वह रासायनिक उर्वरकों से संभव नहीं है. इस मिट्टी का उपयोग संतुलित और जरूरत के मुताबिक बताई गई मात्रा में ही करें.

प्रयास करें कि जरूरी पोषक तत्त्वों का एकतिहाई भाग तालाब की सड़ी हुई मिट्टी, दोतिहाई भाग जरूरी रासायनिक उर्वरकों से पोषक तत्त्वों की पूर्ति हो सके.

पानी बचाना भी बेहद जरूरी

अब हमारी आवश्यकता खाद, बीज व दवाओं की तरह पानी इकट्ठा करने की भी हो चली है. जैसा कि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि अगर पानी नहीं तो खादबीज व दवाएं किसी भी काम के नहीं होंगे, इसलिए हमें सब से पहले पानी जमा करने की तरकीब सही करनी होगी, क्योंकि फसल बिना खाद के खराब बीज के रहते कम या ज्यादा पैदा हो सकती है, किंतु बिना पानी के एक दाना भी पैदा नहीं हो सकता.

यहां पर यह कहना सही होगा कि तालाब से 'आम के आम गुठलियों के दाम' कहावत को बल मिलता है, क्योंकि एक तरफ तालाब की मिट्टी खेतों की उर्वराशक्ति बढ़ाने में मददगार है, वहीं दूसरी ओर यह मिट्टी में पानी के लैवल को बढ़ाने में भी काफी योगदान देते हैं. यही वजह है कि सरकार द्वारा समयसमय पर तालाब संरक्षण के लिए विभिन्न प्रोग्राम चलाए जाते हैं, जिस से किसान अपने गांव में बने तालाबों का संरक्षण कर सकें और उस का लाभ अपनी खेती में उठा सकें.

आज कुदरती हालात पूरी तरह से बदल चुके हैं. यहां पहले के समय में 60 से 70 इंच बारिश सामान्य तौर पर होती थी, अब महज 15 से 20 इंच बारिश हो रही है. पहले पानी की कमी नहीं थी, लेकिन अब बढ़ती आबादी के चलते खेती की जमीन भी कम हो रही है और पानी की खपत भी बढ़ रही है. इसलिए पानी बचाना बेहद जरूरी है. साथ ही, खेती में ऐसे तरीके अपनाने चाहिए, जिस से खेत में कम पानी में ही सिंचाई हो सके.

तालाब की सड़ी मिट्टी के अन्य फायदे

तालाब की सड़ी मिट्टी खेत की भौतिक, रासायनिक और जैविक उर्वरक क्षमता को बढ़ाती है. साथ ही, तालाबों का गहरीकरण होता है और उन की सफाई भी हो जाती है, जिस से पशुपक्षियों व इनसान के इस्तेमाल के लिए पानी मिलता है. जमीन में पानी का लैवल भी बढ़ता है.

मिट्टी के जैविक गुणों पर प्रभाव

अनेक जीवाणु मिट्टी से पोषक तत्त्व ले कर पौधों को देते हैं, इसलिए हम सभी को मेहनत कर के अपने खेत के आसपास वाले तालाबों का संरक्षण करना चाहिए और पानी को जमा करने के लिए अपनेअपने लैवल पर कोशिश करनी चाहिए, तभी हम खेती को अच्छी तरह से कर सकेंगे और उस का भरपूर फायदा उठा सकेंगे.

अगर हम तालाबों को बना लेते हैं तो इस से खेत को तो पानी मिलेगा ही, साथ ही तालाब की मिट्टी, जिस में अनगिनत तादाद में जीवाणु मौजूद रहते हैं, मिट्टी की सेहत को सुधारने के साथसाथ पैदावार कूवत बढ़ाएंगे और हमें अच्छा फसल उत्पादन दे सकेंगे. ■

बागानों में निराईगुड़ाई के लिए इस्तेमाल करें कल्टीवेटर

✻ रामचरण धाकड़

बागानों में फलदार पेड़ों के नीचे खरपतवार को हटाने की समस्या बनी रहती है, जिस के लिए किसानों को अधिक मेहनत करनी पड़ती है. इस पर ज्यादा मेहनत और रकम भी खर्च होती है. हाथ के औजारों से खरपतवार सही तरीके से हट भी नहीं पाती. यही वजह है कि वहां फिर से खरपतवार पैदा होने का डर बना रहता है. इस तरीके से खरपतवार हटाने में जमीन भी उपजाऊ नहीं बन पाती है. अगर इस के स्थान पर इंटरकल्टीवेटर का उपयोग किया जाए तो यह ज्यादा सुविधाजनक और सस्ता होने के साथ जमीन ज्यादा उपजाऊ बन सकती है.

एग्रीकल्चरर इंटरकल्टीवेटर डीजल या पैट्रोल से चलता है. इसे हाथ से चला कर किसान फलदार पेड़ों के नीचे उगी खरपतवार को पूरी तरह हटा देता है. साथ ही, जमीन को भी उपजाऊ बना देता है. इस की वजह से पेड़ों को पर्याप्त पोषण मिलने की वजह से उन में ज्यादा फल लगते हैं, जिस से किसान की आमदनी बढ़ जाती है.

इंटरकल्टीवेटर में लगे रोटर खरपतवार को काट कर जमीन में मिला देते हैं, जो पेड़ों के लिए खाद का काम करती है. इस कल्टीवेटर को आसानी से इधरउधर घुमा कर पेड़ के नीचे और आसपास उगी हुई खरपतवार को पूरी तरह से टुकड़ेटुकड़े कर मिट्टी में मिल जाती है. जब पानी दिया जाता है, तो खरपतवार के टुकड़े उपजाऊ खाद में बदल जाते हैं. इंटरकल्टीवेटर से खरपतवार साफ करना सुविधाजनक होने के साथ सस्ता भी है. एक पेड़ के नीचे से मजदूरों द्वारा खरपतवार हटाने में तकरीबन 30-40 रुपए का खर्चा आता है, जबकि इंटरकल्टीवेटर से खरपतवार हटाने में 10 रुपए से भी कम का खर्चा होता है.

पेड़ों के नीचे के अलावा इन के बीच में बनी जमीन को भी इंटरकल्टीवेटर उपजाऊ बना देता है, क्योंकि कल्टीवेटर में लगे रोटर जमीन को खोद कर उसे इस तरह मिला देते हैं कि जमीन के गुणकारी तत्त्व मिट्टी में बने रहते हैं.

भरतपुर की लुपिन फाउंडेशन संस्था ने वैर पंचायत समिति क्षेत्र के नयावास और गोठरा गांव के 16 किसानों को एग्रीकल्चरर इंटरकल्टीवेटर अनुदान पर मुहैया कराए हैं.

वैसे, इंटरकल्टीवेटर ज्यादा महंगा भी नहीं आता. भारत में इन मशीनों को बनाने वाली कंपनियां किसानों को तकरीबन 30,000 रुपए में मुहैया करा रही हैं, जिस में घंटेभर में तकरीबन 1 लिटर डीजल की खपत होती है. इस का सब से ज्यादा इस्तेमाल लीची, अनार, अमरूद, नीबू वगैरह बागानों में किया जाता है, क्योंकि इन फलदार पौधों के तने काफी नीचे तक फैल जाते हैं. इन पेड़ों के नीचे उगी खरपतवार को हटाने में काफी परेशानी होती है.

गोठरा गांव के बागान मालिक भगवान सिंह ने बताया कि इंटरकल्टीवेटर हासिल हो जाने के बाद उन्हें पेड़ों के नीचे निराईगुड़ाई करने में आसानी हुई है और उत्पादन भी तकरीबन 25 फीसदी तक बढ़ गया है.

इसी तरह गोठरा गांव के मान सिंह तो खरपतवार से काफी परेशान थे. इंटरकल्टीवेटर मिलने के बाद वे एक दिन में ही पूरे बागान के पेड़ों के नीचे पैदा हुई खरपतवार को हटाने में सक्षम हो गए हैं. इस के अलावा आसपास की जमीन को भी वे इंटरकल्टीवेटर के माध्यम से खुदाई कर उपजाऊ बना रहे हैं. ■

मेघदूत मोबाइल एप

मुट्ठी में मौसम की जानकारी

✻ भानु प्रकाश राणा

कुछ साल पहले तक देश के तमाम किसान मौसम की जानकारी के लिए पुराने पारंपरिक तरीकों से ही अनुमान लगाते थे, जैसे हवा चलने का रुख आसमान को देख कर या पक्षियों के व्यवहार को देख कर या उन का खुद का अनुमान था, जिस के आधार पर वह मौसम के बारे में अनुमान लगा सकते थे. उसी अनुमान के आधार पर वह अपने खेतों काम करते थे, चाहे वह बीज बोआई का काम हो, खेत में पानी देने का काम हो या फसल गहाई का काम हो, लेकिन पुराने तरीके से अनुमान लगाना कभीकभी गलत भी हो जाता था. लेकिन उस समय इस के अलावा कोई चारा भी नहीं था, क्योंकि उस समय मौसम की जानकारी देने के लिए कोई ऐसा सटीक इंतजाम भी नहीं था, जिस से किसानों को जानकारी मिल सके.

लेकिन अब तकनीकी के दौर में अनेक ऐसे आधुनिक साधन हैं, जिन में किसानों को मौसम की सही जानकारी मिलती है.

मोबाइल एप भी इसी कड़ी का एक हिस्सा है. आजकल कृषि के क्षेत्र में अनेक ऐसे कृषि मोबाइल एप हैं, जो खेती से जुड़ी तमाम जानकारी मुहैया कराते हैं. मौसम की जानकारी देने के लिए ऐसा ही एक एप है 'मेघदूत मोबाइल एप', जिस के जरीए किसान या आमजन मौसम की जानकारी ले सकता है.

'मेघदूत मोबाइल एप' के बारे में मौसम वैज्ञानिक डाक्टर पूजा गुप्ता सोनी ने बताया कि आज के ज्यादातर किसान स्मार्टफोन से जुड़े हैं और उन्हें इंटरनैट व आधुनिक तकनीकी से जोड़ने के लिए मौसम विज्ञान विभाग व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने मिल कर एक एप्लिकेशन तैयार किया है. इस एप्लिकेशन को एंड्रोयड मोबाइल फोन में आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है.

इस मेघदूत मोबाइल ऐप के जरीए किसानों को घर बैठे मौसम की जानकारी मिलती है. यह एप आने वाले 5 दिनों तक की जानकारी देता है. अगर मौसम में कोई खास बदलाव है, तो उस की चेतावनी भी जारी की जाती है. इस के अलावा इस में समयसमय पर उन्नत खेती के बारे में अनेक सुझाव मिलेंगे.

इस एप को अपने मोबाइल फोन में डाउनलोड करने के लिए प्लेस्टोर में जाना होगा. वहां पर रजिस्ट्रेशन करने के लिए किसान को

या अन्य जिसे भी यह ऐप डाउनलोड करना है, उसे कुछ सामान्य जानकारी फोन नंबर सहित देनी होगी. उस के बाद यह एप आप के मोबाइल फोन में डाउनलोड हो जाता है. यह एप देश की प्रमुख 10 भाषाओं में बनाया गया है.

इस एप के जरीए बारिश, धूप, कुहरा, पाला, गरमी, सर्दी, मौसम की नमी वगैरह के बारे में जानकारी मिलती है.

'मेघदूत मोबाइल एप' की खासीयत यह है कि फसलों में कब सिंचाई करें, खेती में कितनी खाद दें, मौसम के हिसाब से कौन सी फसल लगाएं वगैरह की जानकारी भी मिलती है.

यह एप्लिकेशन कुछ चुनिंदा इलाकों के लिए हर मंगलवार और शुक्रवार को फसल की जरूरत के बारे में भी जानकारी देता है, इसलिए अगर आप के पास भी एंड्रोयड फोन है तो इस का फायदा ले सकते हैं. ■

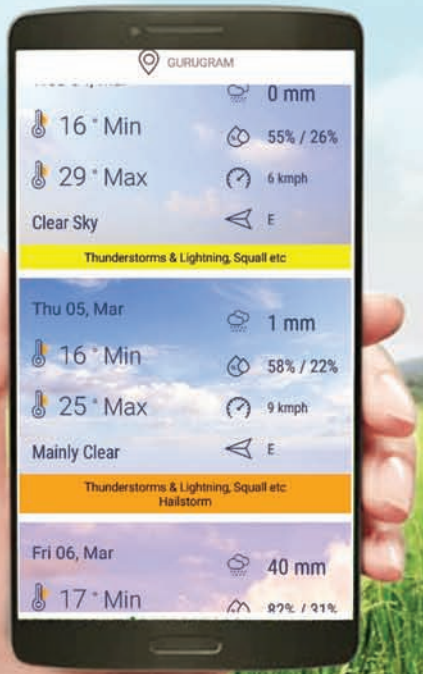

सब्जियों की संकर किस्में

✻ भानु प्रकाश राणा

राष्ट्रीय बागबानी अनुसंधान संस्थान एवं विकास प्रतिष्ठान 35 सालों से किसानों के लिए सब्जी की खेती पर खासा सहयोग कर रहा है, खासकर के प्याज, लहसुन, टमाटर, लोबिया, मटर, धनिया, मेथी, सहजन जैसी सब्जियां का बेहतर बीज भी मुहैया करा रहा है. टमाटर और मिर्च के संकर बीज भी संस्थान द्वारा मुहैया कराए जाते हैं. इन संकर बीजों की क्वालिटी बाजार में मौजूद दूसरे बीजों से कहीं बेहतर है.

टमाटर बीज अर्का रक्षक : बीज की यह प्रजाति भारतीय बागबानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलुरु द्वारा विकसित की गई है. इस प्रजाति का पौधा लगभग 100 सैंटीमीटर ऊंचा, ज्यादा शाखाओं वाला होता है. इस में मिलने वाली उपज का रंग गहरा लाल होता है.

फसल में फूल लगभग 60 दिन में ही 50 फीसदी तक आ जाते हैं. बोआई के तकरीबन 90 दिन बाद तुड़ाई के लिए टमाटर तैयार हो जाते हैं. 140 से 145 दिन में इस प्रजाति के फल 80 से 90 ग्राम तक के वजन में तैयार हो जाते हैं. तकरीबन 750 से 800 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से उपज मिलती है. इस प्रजाति में झुलसा जैसे रोग का हमला भी नहीं होता.

कैसे करें टमाटर की खेती

अच्छी पैदावार के लिए मिट्टी का पीएच मान 6.5 से 7.5 तक होना चाहिए.

नर्सरी लगाने का समय : पौध तैयार करने के लिए बीज को उत्तरी भारत के लिए सितंबर से अक्तूबर माह, दक्षिण भारत के लिए मई, जून माह और मध्य पश्चिमी इलाकों के लिए फरवरी, मार्च माह में नर्सरी डालते हैं.

सिंचाई : पहली सिंचाई पौध लगाने के तुरंत बाद करनी चाहिए और बाद में सिंचाई मिट्टी में 50 फीसदी नमी होने पर जरूरत के अनुसार करें.

लाइनों में लगाई गई पौध में ड्रिप सिंचाई व मल्चिंग तकनीक में कम पानी की जरूरत होती है.

नर्सरी तैयार करने का तरीका : खेत की सतह से तकरीबन आधा फुट

ऊंची, एक मीटर चौड़ी और 3 मीटर लंबी क्यारियां बनाते हैं. प्रति हेक्टेयर नर्सरी के लिए 5 किलोग्राम एनएचआरडीएफ ट्राकोवीर (ट्राइकोडर्मा) से मिट्टी को उपचारित कर लेते हैं और बीज को लाइनों में डाल देते हैं. बीज रोपने के बाद 25-30 दिनों में पौध तैयार हो जाती है. पौध को रोपने से पहले ट्राइकोडर्मा के 5 फीसदी वाले घोल में उपचारित कर लें. इस के बाद 60X30 सैंटीमीटर की दूरी पर पौध लगा दें.

खाद व उर्वरक : खेत तैयार करते समय गोबर की सड़ी खाद या कर्मी कंपोस्ट खाद को खेत में मिला देना चाहिए. पौध रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 300 किलोग्राम नाइट्रोजन, 150 किलोग्राम फास्फोरस, 150 किलोग्राम पोटाश व 25 किलोग्राम सूक्ष्म तत्त्व मिश्रण की जरूरत होगी.

नाइट्रोजन की आधी मात्रा और बाकी उर्वरकों की पूरी मात्रा रोपाई के समय डालें. बाकी बची नाइट्रोजन की आधी मात्रा 30 दिन में और बाकी बची आधी मात्रा को 40 दिन पर खड़ी फसल में डालें.

खरपतवार की रोकथाम : खरपतवार की रोकथाम के लिए पौधा रोपने से पहले 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से फ्लूकोरीन या पैंडीमिथेलिन डालें. निराईगुड़ाई समय पर करें.

फसल का बचाव : अगेती झुलसा रोग की रोकथाम करने के लिए डाईथेन एम-45 या इंडोलिक जेड-78 को 0.25 फीसदी का 15-20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें.

लीफकर्ल रोग : इस रोग की रोकथाम के लिए सफेद मक्खी को रोकना बहुत जरूरी है. सब से पहले रोगग्रस्त पौधे को उखाड़ कर जमीन में दबा दें. रोकथाम करने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल का 0.3 मिलीलिटर एसिटामिप्रिड 10 मिलीलिटर या थायोडान 3 मिलीलिटर प्रति लिटर की दर से 10-12 दिन के अंतराल पर फसल पर छिड़कें या नीमयुक्त कीटनाशक (1500 पीपीएम) का 2 फीसदी प्रति लिटर घोल का 7-10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें.

इस में दी गई जानकारी संस्थान द्वारा सुझाई गई हैं. मौसम में बदलाव, खेत की जमीन या अन्य किसी वजह से उत्पादन में कुछ बदलाव हो सकते हैं, इसलिए किसी सलाह के लिए अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र से जानकारी ले सकते हैं. इस के अलावा करेले की कुछ खास किस्मों के बारे में भी जानकारी दी जा रही है.

करेला अर्काहरित : भारतीय बागबानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलुरु द्वारा विकसित इस किस्म के फल चमकदार हरे, मुलायम, मोटे गूदे वाले होते हैं. 120 दिनों में तैयार होने वाली इस किस्म से 130 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार मिलती है.

करेला पूसा विशेष : इस किस्म को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली द्वारा विकसित किया गया है. इस की बेल कम लंबाई में बढ़ती है, इसलिए पौधों से पौधों की दूरी कम रखनी चाहिए. मतलब, तय क्षेत्रफल में दूसरी किस्म की अपेक्षा ज्यादा पौधे लगाए जा सकते हैं.

इस के फल मुलायम हरे, मध्यम लंबाई के होते हैं, जो अचार या अन्य प्रसंस्करण के लिए मुफीद हैं.

फुले ग्रीन गोल्ड : यह किस्म ग्रीन लोंग नाइट और दिल्ली लोकल के संकर किस्मों से विकसित की गई है. इस किस्म के फल गहरे हरे, अधिक लंबे फल और फलों पर नुकीले मध्यम आकार के रोहे (रोपे) होते हैं.

इन किस्मों को भारत में उत्तरी इलाकों में फरवरीमार्च व जूनजुलाई माह में और दक्षिण भारत के इलाकों में पूरे साल कभी भी लगाया जा सकता है. ■

सदाबहार है गेंदे की खेती

उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में फूलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए उद्यान विभाग द्वारा गेंदे और गुलाब की खेती कराई जा रही है. महोबा जिले में गेंदे की खेती की काफी संभावनाएं मौजूद हैं.

जैसा कि हम जानते हैं कि गेंदा को भारत में खास फूल के रूप में जानते हैं. यह विभिन्न रंगों, सभी आबोहवा में आसानी से पैदा होता है. जहां तक इस की उपयोगिता की बात है तो इस के फूल व पत्तियां दवा के साथसाथ खुशबूदार तेल के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं.

इस के अलावा जिन खेतों में नेमेटोड का असर ज्यादा होता है, उस को गेंदा के पौधे आसानी से काबू करते हैं. जिन फसलों में फलमक्खी का हमला ज्यादा होता है और मोजेक बीमारी लगती है, उन में गेंदा की खेती ज्यादा उपयोगी साबित होती है. फलमक्खी पीले रंगों पर आकर्षित होती है, जिस से मुख्य फसल मक्खी के हमले से बच जाती है और उस की पैदावार अच्छी होती है.

गेंदा की खेती सभी तरह की मिट्टी में की जा सकती है, लेकिन सब से ज्यादा अच्छी गहरी बलुई दोमट मिट्टी है, जिस में पानी निकासी की अच्छी व्यवस्था हो.

गेंदे की खेती के लिए औसत तापमान अच्छा होता है, जिस में 15-20 डिगरी सैल्सियस तापमान सब से अच्छा है और सामान्य बारिश व नमी हो. जल्दी व अच्छी फूल देने वाली किस्में अफ्रीकन रैड, अमेरिकन ड्वार्फ, पूसा रैड, पूसा बसंती, पूसा नारंगी वगैरह हैं.

गेंदे की अच्छी खेती के लिए गरमियों में एक गहरी जुताई और 2 उथली जुताई कर मिट्टी को भुरभुरी बना लेते हैं, फिर पाटा लगा कर मेंड़ बनाते हैं. मेंड़ों पर पौधे लगाते हैं, जिस से सिंचाई में किसी तरह की परेशानी न हो.

गेंदे की खेती बीज से नहीं, बल्कि पौध से की जाती है. पौध के लिए जून महीने में नर्सरी तैयार करते हैं, जो जमीन से 6-9 इंच ऊपर बनाई जाती है. क्यारी में सड़ी हुई गोबर की खाद डाल कर उस में फफूंदनाशक कैप्टान, थीरम या ट्राइकोडर्मा का इस्तेमाल करते हैं.

बीज की बोआई साल में 3 बार की जा सकती है. मध्य जून से मध्य जुलाई तक, मध्य सितंबर से मध्य अक्तूबर तक और मध्य जनवरी से 31 जनवरी तक. जब पौधे 3-4 इंच के हो जाएं, तब उन्हें तैयार खेतों में लगाते हैं. पौधे लगाते समय दूरी का जरूर ध्यान रखना चाहिए.

आमतौर पर देखा जा रहा है कि किसान गेंदे की खेती में खाद व कैमिकल का इस्तेमाल नहीं करते हैं, जिस से उन्हें फसल का सही फायदा नहीं मिल पाता है और 70-75 दिन बाद पौधों की बढ़वार रुक जाती है.

*** संवाददाता**

अच्छी मात्रा में फूल हासिल करने के लिए फसल को नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की तय मात्रा देनी चाहिए. एक हेक्टेयर खेत में नाइट्रोजन 200 किलोग्राम, फास्फोरस 100 किलोग्राम और पोटाश 50 किलोग्राम दें.

जब पौधे बढ़वार कर रहे हों तो नाइट्रोजन व मैग्नीशियम का इस्तेमाल करना चाहिए. नाइट्रोजन का आधा हिस्सा पौध रोपाई से पहले, बाकी पौधों की बढ़वार करने व फूल के समय देना चाहिए. पोटाश व फास्फोरस की पूरी मात्रा आखिरी जुताई के बाद व पौध रोपाई से पहले आधी मात्रा नाइट्रोजन के साथ देनी चाहिए.

सिंचाई की जरूरत मिट्टी की किस्म व मौसम के ऊपर निर्भर करती है. सूखे इलाके में हर हफ्ते सिंचाई की जरूरत पड़ती है, जबकि बरसात के मौसम में खेत से फालतू पानी के निकलने की व्यवस्था की जानी चाहिए.

लंबी किस्म वाले पौधों के लगाने के 40 दिन बाद तनों को ऊपर से 2-3 सैंटीमीटर काट देते हैं, जिस से पौधों में ज्यादा शाखाएं निकलती हैं और ज्यादा फूल मिलते हैं.

गेंदे की अच्छी खेती के लिए 2-4 बार खरपतवार निकालना, 1-2 बार खेत की गुड़ाई करनी पड़ती है. पूरी तरह से बढ़े हुए फूलों को ही तोड़ना चाहिए व फूल तुड़ाई का सही समय सुबह का है. तुड़ाई के बाद फूलों को हवादार व छायादार जगहों में रखना चाहिए. ■

सूखे फूलों से सजावट

* संवाददाता

ताजा फूलों की अपनी अलग ही कीमत होती है. गुलदस्ते बनते हैं, हार पिरोए जाते हैं, महिलाएं चोटी व जूड़े में ताजा फूल लगा कर अपने रूप और श्रृंगार को चारचांद लगाती हैं.

लेकिन अब ताजा फूलों के साथ सूखे फूलों का चलन भी बढ़ने लगा है. सूखे फूलों से कई चीजें तैयार की जाती हैं. लिफाफे, कार्ड, गुलदस्ते, डब्बे, तसवीरें, सजावटी चिड़िया और कलाकृतियां वगैरह इन से बनाई जाती हैं. वैसे तो सभी देशों में सूखे फूलों का सजावट में इस्तेमाल होता है, लेकिन डिजाइन की दुनिया में चीन और जापान का कोई मुकाबला नहीं है.

अब सूखे हुए फूलों ने अपनी खूबसूरती का जाल बिछा लिया है. हर समारोह में सूखे फूलों का इस्तेमाल किया जाता है. आजकल तो कई कोर्स भी शुरू हुए हैं, जिन में डिजाइन के बारे में अलगअलग तकनीकें बताई जाती हैं. खासतौर पर सूखे फूल, अखबारों की कतरन, टूटाफूटा सामान वगैरह से सुंदर चीजें तैयार की जाती हैं.

गरमी के दिनों में ताजा फूलों की कमी होती है. उस समय सूखे फूलों की मांग बढ़ने लगती है. घरों, इमारतों की भीतरी सजावट व आंगन की सुंदरता के लिए सूखे फूल और पत्ते लोगों का ध्यान खींचते हैं.

फूलों को सही ढंग से तोड़ा जाना चाहिए, ताजा फूल को सावधानी से तोड़ने के बाद नमी, मिट्टी व कूड़ाकरकट से बचा कर रखना जरूरी है.

पौधों को जरूरत के मुताबिक पानी देना चाहिए, क्योंकि ज्यादा या कम पानी पौधों को नुकसान पहुंचा सकता है. पौधे के मुरझाने के समय 10 फीसदी ज्यादा पानी की जरूरत होती है क्योंकि पानी पौधे की जड़ों तक पहुंचना चाहिए. पौधे ज्यादा देर तक अंदर न रखें, ये बीमारी का शिकार हो सकते हैं. खुली ताजा हवा इन की सेहत में इजाफा करती है. पौधा तंदुरुस्त रहता है. कीटपतंगे व बीमारियों से बचाने के लिए 0.2 फीसदी डाइथेन व 0.1 फीसदी रोगोर दवा का छिड़काव जरूरी होता है.

गमलों की मिट्टी भुरभुरी और मुलायम होनी चाहिए. जरूरत के अनुसार पानी दें. ज्यादा पानी नुकसान कर सकता है. गमलों में सजावट के लिए फूलों के पौधे, पीपल, बरगद, अनार, आम, काजू वगैरह लगाए जाते हैं, जो अच्छे लगते हैं.

घरेलू खाद, मलमूत्र, पत्तों की खाद पौधे को तंदुरुस्त रखती है और पानी सुखाने में मदद करती है. गमलों में खादपानी और दूसरे तत्त्व हिसाब से ही डालने चाहिए, ताकि गमले के हिसाब से पौधा बढ़े.

फूलों को सुखाना

माइक्रोवेव में सुखाना: फूलों को माइक्रोवेव की ट्रे में सिलिका जैल डाल कर 6 मिनट तक रखा जा सकता है. छोटे फूल व चोटी शाखा वाले फूल इस तरह से सुखाने चाहिए क्योंकि इस से समय को बचाया जा सकता है. वस्मल, लार्कस्वर, लेगूरस बीजा, स्टैटिल वगैरह फूलों को सुखाने का एक खास तरीका होता है.

इन फूलों को 4 से 6 दिन तक अंधेरे में, हवादार कमरे में उलटा लटका कर सुखाया जाना चाहिए. लार्कस्पर के फूलों को तो फरवरी महीने के आखिरी दिनों में व अप्रैल महीने में सिलिका जैल में दबा कर 5 दिनों तक रखने से फूल अच्छी तरह से सूख कर तैयार हो जाते हैं.

हवा से फूल सुखाना: हवा से फूल सुखाने का ढंग आसान और सस्ता होता है. फूलों के गुच्छे बना कर रस्सी में बांध कर किसी हवादार अंधेरे कमरे में उलटा लटका दें और 4-5 दिन में फूल सूख कर तैयार हो जाते हैं.

ओवन में सुखाना: फूल और पत्तों को सिलिका जैल में दबा कर ओवन में 40-50 डिगरी सैंटीग्रेड तापमान में रखा जाए, तो फूल व पत्ते सूख जाते हैं.

दबा कर सुखाना: यह बहुत पुराना तरीका है. फूलपत्तों को सही ढंग से अखबारों की तह में रख कर ऊपर वजन रख दें. 4-5 दिन में फूल सूख कर तैयार हो जाते हैं. कार्ड और सजावटी जगहों पर यह फूल इस्तेमाल होते हैं.

सूखे हुए फूलों को सजाना, स्टाइल देना, आकार देना, परोसना हर आदमी को नहीं आता. किस रंग को कहां रखा जाए, किस रंग के साथ जोड़ा जाए, छोटेबड़े फूलपत्ती से कौन सा डिजाइन कहां दिया जाए, यह एक कला है. सूखे हुए फूलों की साजसज्जा के ऐक्सपर्ट होते हैं. इस बारे में कई किताबें भी मार्केट में मुहैया हैं.

कुलमिला कर यह एक कला है. इस के लिए ट्रेनिंग जरूरी है. कुछ लोग देख कर भी यह कला सीख लेते हैं. ■

ग्वार की खेती से ऐसे लें फायदा

✻ अक्षय कुलश्रेष्ठ

ग्वार एक ऐसी दलहनी फसल है, जो कई तरह से हमारे इस्तेमाल में आती है. पालतू जानवरों के लिए तो यह एक ऐसा पौष्टिक चारा है, जो उन्हें ताकतवर बनाने के साथसाथ उन में दूध देने की कूवत भी बढ़ाता है.

दुनिया के कुल ग्वार उत्पादन का 80 फीसदी भारत में होता है. ग्वार एक प्राचीन व बहुद्देशीय दलहनी फसल है, जो मुख्य रूप से शुष्क व अर्धशुष्क इलाकों में उगाई जाती है. ग्वार गरम मौसम की फसल है. इसे अकसर ज्वार या बाजरे के साथ मिला कर बोया जाता है.

भारत में पारंपरिक रूप से ग्वार की खेती राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में की जाती है.

वैसे तो अलगअलग जगहों पर ग्वार को अलगअलग नामों से जाना जाता है. इसे मध्य प्रदेश राज्य में चतरफली के नाम से जाना जाता है, वहीं उत्तर प्रदेश में इसे ग्वार की फली के रूप में जानते हैं. ग्वार का ज्यादातर इस्तेमाल जानवरों के चारे के रूप में होता है. पशुओं को ग्वार खिलाने से उन में ताकत आती है और दुधारू पशुओं में दूध देने की कूवत बढ़ती है.

ग्वार से गोंद भी बनाया जाता है. इस गोंद का इस्तेमाल अनेक चीजों को बनाने में होता है. ग्वार की फली की सब्जी बनाई जाती है. साथ ही, इसे दूसरी सब्जियों के साथ मिला कर भी बनाया जाता है, जैसे आलू के साथ, दाल या सूप बनाने में, पुलाव वगैरह में भी इसे डाल कर स्वादिष्ठ बनाया जा सकता है.

ग्वार फली स्वाद में मीठी व फीकी हो सकती है, पर यह पेट में देर से पचती है, क्योंकि यह शीतल प्रकृति की और ठंडक देने वाली है, इसलिए इस के ज्यादा सेवन से कफ की शिकायत हो सकती है, लेकिन ग्वार शुष्क इलाकों के लिए एक पौष्टिक भोजन है.

ग्वार की फली में कई पौष्टिक तत्त्व पाए जाते हैं, जो सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं. यह भोजन में अरुचि को दूर कर के भूख को बढ़ाने वाली होती है. इस के सेवन से मांसपेशियां मजबूत बनती हैं. ग्वार फली में प्रोटीन भरपूर मात्रा में होता है.

मधुमेह के मरीजों के लिए ग्वार की फली को किसी भी रूप में लेना फायदेमंद है. यह शुगर लैवल को नियंत्रित करती है. साथ ही, यह पित्त को खत्म करने वाली है. ग्वार फली की सब्जी खाने से रतौंधी की बीमारी दूर हो जाती है. ग्वार फली पीस कर पानी के साथ मिला कर मोच या चोट वाली जगह पर इस का लेप लगाने से आराम मिलता है.

पौध के बीज में ग्लैक्टोमेनन नामक गोंद होता है. इस गोंद का इस्तेमाल दूध से बनी चीजें जैसे आइसक्रीम, पनीर वगैरह में किया जाता है. इस के बीजों से बनाया जाने वाला पेस्ट भोजन,

औषधीय उपयोग के साथ ही अनेक उद्योगों में भी काम आता है.

ग्वार की नई प्रजाति

पूसा नवबहार : यह प्रजाति आईएआरआई द्वारा पूसा सदाबहार और पूसा मौसमी के संकर से निकाली गई है. फली 15 सैंटीमीटर लंबी, हरी, मुलायम, पौधे में कम टहनियां होती हैं. खरीफ और गरमी के मौसम के लिए यह प्रजाति उपयुक्त है. यह लोजिंग और बैक्टीरियल ब्लाइट से जल्दी प्रभावित नहीं होती. उपज तकरीबन 12 टन प्रति हेक्टेयर है.

मिट्टी : ऐसी उपजाऊ मिट्टी, जिस का पीएच मान साढ़े 7 से 8 हो, अच्छी मानी गई है. साथ ही, पानी निकासी का बंदोबस्त बेहतर हो.

जलवायु : इस प्रजाति की देर से बोई गई फसल भी अच्छी होती है. यहां तक कि यह कहींकहीं बारिश में भी पैदा हो जाती है.

खेत की तैयारी : 2 या 3 जुताई गहरी करें या 2 जुताई हैरो से करने के बाद पाटा चला कर समतल कर लें.

बोने का समय

मार्च के महीने में चारे की फसल लेने के लिए बोआई करें, वहीं बीज की फसल के लिए जुलाई का महीना मुफीद है.

बीज की मात्रा : प्रति हेक्टेयर 10-15 किलोग्राम बीज की फसल के लिए, वहीं दूसरी ओर 35-40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर चारा फसल के लिए मुफीद है.

बोआई और दूरी : 1 किलोग्राम बीज को पहले राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लें. इस के बाद बीज को 5-7 सैंटीमीटर गहरा और 45 से 50 सैंटीमीटर लाइन में बोना चाहिए, वहीं झाड़ियों वाली फसल के लिए और 30 सैंटीमीटर तना वाली जातियों के लिए बोना सही रहता है.

खाद : 15-20 किलोग्राम नाइट्रोजन और 40 किलोग्राम फास्फोरस फसल बोने से पहले मिट्टी में डालें.

सिंचाई : यह बरसात के मौसम में लगाते हैं. बारिश न होने पर 1-2 सिंचाई कर देनी चाहिए. गरमियों में 2-3 सिंचाई देनी चाहिए. खरीफ मौसम में पानी निकासी का बंदोबस्त सही होना चाहिए, क्योंकि ग्वार पानी बरदाश्त नहीं कर सकता है. ग्वार में फूल आने से पहले 500 पीपीएम साइकोसील का छिड़काव करने से उपज में बढ़ोतरी होती है.

खरपतवार की रोकथाम : 1 या 2 गुड़ाई शुरू के 25-30 दिन बोने के बाद ही करनी चाहिए. बीज की फसल के लिए बासालीन ढाई लिटर प्रति हेक्टेयर में छिड़काव करना चाहिए.

ग्वार की सब्जी में पाए जाने वाले पोषक तत्त्व

प्रोटीन (ग्राम)	3.2
वसा (ग्राम)	0.4
खनिज तत्त्व (ग्राम)	1.4
रेशा (ग्राम)	2.2
कार्बोहाइड्रेट्स (ग्राम)	11
कैलोरी	16
कैल्शियम (मिग्रा)	0.13
फास्फोरस (मिग्रा)	0.04
आयरन (मिग्रा)	0.006
विटामिन ए (आय. यु.)	316
विटामिन बी (मिग्रा)	0.1
विटामिन सी (मिग्रा)	0.05

(100 ग्राम खाने योग्य ग्वार की सब्जी में पोषक तत्त्वों की मात्रा)

बीमारी और कीट

बैक्टीरियल ब्लाइट : इस बीमारी में धब्बे और ब्लाइट साथसाथ होती है, खासकर बरसात में हवा में ज्यादा नमी के समय और ज्यादा गरमी में हमला जल्दी होता है.

यह बीमारी बीज से होती है. बीज को स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 0.02 फीसदी घोल के साथ उपचारित करना चाहिए. साथ ही, प्रतिरोधक जातियां लगानी चाहिए. सड़े पौधे दिखने पर हटा देने चाहिए.

आल्टरनेरिया लीफ स्पौट : इस बीमारी में पत्तियों के कोने पर गोलाकार धब्बे 2 से 10 मिलीमीटर आकार के होते हैं. मैंकोजेब या जिनेब 0.25 फीसदी घोल के साथ स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 0.02 फीसदी घोल का मिश्रण बोने के 5 हफ्ते बाद छिड़काव करने से रोकथाम की जा सकती है.

पाउडरी मिल्ड्यू : इस बीमारी में ग्वार की पत्तियों पर असर होता है. साथ ही, सफेद माइसिलिया के बिंदुनुमा धब्बे फलों पर होते हैं. बेनोमील 0.2 फीसदी या डाइनोकेप 0.1 फीसदी घोल का छिड़काव करने से रोकथाम की जा सकती है.

ड्राई रूटराट : यह बीमारी जड़ के सड़ने के साथ शुरू होती है. बाद में तनों में भूरापन व कालापन होता है. फसल चक्र या ऐसी फसलें लगाएं, जिन पर यह बीमारी कम होती है.

बीज को कार्बंडाजिम 0.2 फीसदी से उपचारित करने से कम बीमारी होती है या ट्राइकोडर्मा 2,500 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छनी गोबर की खाद में मिला कर मिट्टी में मिला दें.

एंथ्रेक्नोज : जब ग्वार की फसल में यह बीमारी लगती है, तो तने, पत्तियां और फलियां प्रभावित होती हैं. जो भाग प्रभावित होता है, वह भूरे रंग का हो जाता है और किनारे लाल या पीले रंग के हो जाते हैं. साथ ही, प्रभावित तने फट कर सड़ जाते हैं. फलियों पर भी छोटेछोटे काले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं. इस रोग से पूरी फसल खराब हो सकती है. यह रोग ग्रसित बीज से फैलता है.

इस बीमारी की रोकथाम के लिए बोने से पहले बीजों को सेरेसान, कैप्टान या फिर थीरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें, वहीं डाईथेन एम-45 या बाविस्टिन 0.1 फीसदी का घोल बनाएं और रोग से ग्रसित पत्तियों व फलियों पर छिड़क दें. इस प्रक्रिया को 7-10 दिन के अंतराल पर फिर से करें.

जड़ गलन : जब फसल में पौधों की जड़ों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ने लगें तो समझ लें कि फसल को जड़ गलन बीमारी लग गई है. इस बीमारी के फैलने से पौधे मुरझा जाते हैं.

इस रोग से फसल को बचाने के लिए बीजों को बोने से पहले वीटावैक्स 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें. मई से जून माह में सिंचाई व जुताई करें. इस के बाद खेत को खुला छोड़ दें. साथ ही, फसल को खरपतवारों से रहित रखें.

मोजेक : ग्वार की फसल में मोजेक एक विषाणुजनित बीमारी है. इस में पौधे की पत्तियों पर गहरे हरे रंग के धब्बे होने लगते हैं, तो वहीं पत्तियां अंदर की तरफ सिकुड़ जाती हैं और पूरा पौधा पीला पड़ कर सड़ जाता है. इस रोग से फसल को बचाने के लिए रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ दें. साथ ही, कीटनाशक दवा न्यूवाक्रौन या फिर मैटासिस्टौक्स 1 मिलीलिटर प्रति लिटर पानी का घोल बना कर छिड़कें.

चूर्णी फफूंद : इस बीमारी का असर पौधे के सभी भागों पर पड़ता है. इस में पौधों की पत्तियों पर सब से पहले सफेद धब्बे पड़ते हैं, जो तने और हरी फलियों पर भी फैल जाते हैं. इस में पौधों की पत्तियां और हरे भागों पर सफेद चूर्ण जैसे धब्बे दिखाई देते हैं. इस रोग के प्रकोप से पत्तियां सड़ कर गिरने लगती हैं.

इस बीमारी से फसल को बचाने के लिए पौधों की अच्छी तरह देखभाल करें. रोग दिखते ही घुलनशील गंधक की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लिटर पानी में घोल कर छिड़क दें या कैराथेन दवा की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लिटर पानी में घोल बना लें और पौधों पर छिड़क दें. इस से फसल में चूर्णी फफूंद नहीं लगेगी.

इस के अलावा फसल पर ब्लाइट रोग यानी झुलसा अंगमारी का भी हमला होता है. इस रोग की रोकथाम के लिए कौपर औक्सीक्लोराइड 0.3 फीसदी 2 से 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर व 18 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से घोल बना कर छिड़कें, वहीं फसल पर हरा तैला यानी जैसिड, तेलीया यानी एफिड व सफेद मक्खी का प्रकोप भी देखा गया है.

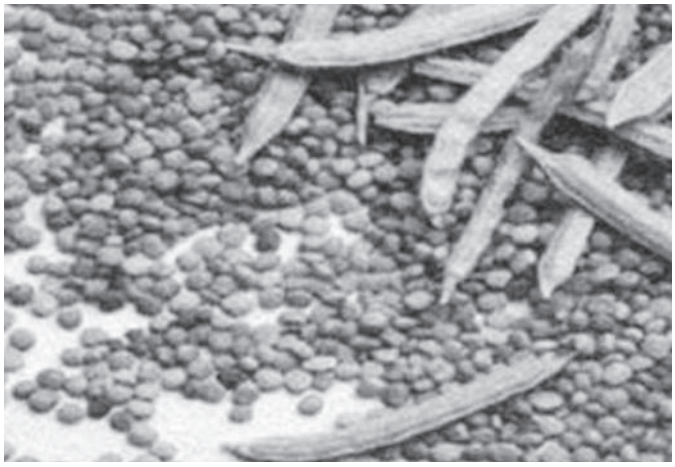

रस चूसने वाले इन कीटों के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 36 एसएल 1 लिटर या एसीटामीप्रीड 150 ग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करें.

फली बीटल (पिस्सू कीट) : इल्लियां आमतौर पर खेत में रह कर जड़ को खाती हैं. बीज पत्रों और छोटे पौधे की पत्तियों को छेद कर खाती हैं. इस से फसल की बढ़वार घट जाती है. फसल पर 5 फीसदी फौलीडाल चूर्ण 28 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करना चाहिए, वहीं 10 फीसदी सेविन चूर्ण का भुरकाव करने पर इस कीट से बचा जा सकता है.

खरीफ का टिड्डा : इस कीट के शिशु शुरू में कोमल छोटी पत्तियों और तनों को काट कर खाते हैं. ज्यादा प्रकोप होने पर पौधों की बढ़वार रुक जाती है और ग्रसित पौधों में छोटी फलियां लगती हैं. क्विनालफास 1.5 फीसदी चूर्ण या मिथाइल पैराथियान 2 फीसदी चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें.

कटाई व धुनाई : सब्जी वाली फसल के लिए 6-7 हफ्ते में फलियां खाने योग्य हो जाती हैं. मुलायम रहते हुए ही ग्वार की फलियां तोड़ लेनी चाहिए. फलियों की पैदावार तकरीबन 8-10 टन प्रति हेक्टेयर मिलती है. दानों की फसल 90 से 100 दिन में तैयार हो जाती है. हलकी मिट्टी में फसल 10-15 दिन पहले तैयार होती है. फसल कटने पर पक्के फर्श पर फैला कर उस पर बैल या ट्रैक्टर चलाते हैं. तकरीबन 9-10 क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर हासिल होता है. ■

ग्वार की फसलों में अपनाए जाने वाले सुझाव

- कीटनाशकों को हमेशा आखिरी विकल्प के रूप में चुनना चाहिए.
- अगर कीटनाशकों का उपयोग करना ही पड़े तो एक बार में एक ही कीटनाशी का प्रयोग करें.
- हमेशा बदलबदल कर कीटनाशी का उपयोग करना फायदेमंद होता है, क्योंकि किसी एक कीटनाशी के प्रति कीटों में प्रतिरोधक क्षमता विकसित नहीं हो पाती है.
- नंगे हाथों से भुरकाव न करें.
- कृषि अधिकारियों व वैज्ञानिकों से सलाह ले कर अपनी समस्याओं का समाधान करें.
- राष्ट्रीय लैवल पर किसान काल सैंटर की मुफ्त सेवा का फायदा अवश्य लें.

पशुपालन में सब से आगे हरियाणा

चंडीगढ़ : केंद्रीय पशुपालन, मत्स्य एवं डेरी राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि हरियाणा पशुपालन में देश में सब से आगे है. आज हरियाणा को पूरा देश फौलो कर रहा है. अगर आप भैंस की मुर्राह नस्ल में देखेंगे तो वह हरियाणा से है और क्रौस ब्रीड देखेंगे तो वह भी हरियाणा से है. हरियाणा का यह विभाग देश में सब से अव्वल है.

एनडीआरआई में आयोजित पशुधन प्रदर्शनी के समापन अवसर पर वे बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे थे. उन्होंने कहा कि हरियाणा देश का पहला राज्य है, जहां पर कृषि व पशुपालकों के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत होती है. देश के अन्य राज्यों को भी हरियाणा का अनुसरण करना चाहिए. हरियाणा सरकार ने कृषि क्रेडिट कार्ड की तर्ज पर पशुधन क्रेडिट कार्ड और बड़ी तादाद में पशुओं का बीमा कर के पूरे देश में पशुपालकों के लिए बड़ी सौगात दी है.

हरियाणा का किसान व पशुपालक मेहनती और ईमानदार है. इन की मेहनत से ही प्रदेश को देश में दूध व कृषि के मामले में अव्वल स्थान प्राप्त है. हरियाणा सरकार भी पशुपालकों के लिए अनेक योजनाएं बनाने जा रही है, जिन की शुरुआत देश में अब तक किसी भी राज्य में नहीं हुई है. पशुओं में मुंहखुर व गलघोंटू जैसी बीमारी के लिए संयुक्त रूप से एक ही वैक्सिन ईजाद कर के इस बीमारी को प्रदेश से बिलकुल खत्म सा कर दिया है. कृत्रिम गर्भाधान के लिए सरकार ने उदारता दिखाते हुए इस की बहुत ही कम कीमत रखी है. यहां की मुर्राह नस्ल की भैंस का पूरी दुनिया में नाम है.

राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि किसान रातदिन मेहनत करता है, सालों से किसानों की अनदेखी हुई है, जो दर्जा किसानों को मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला है. परंतु अब किसानों के हितों की बात सरकार द्वारा की जा रही है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य है कि देश के किसान की आय साल 2022 तक दोगुनी हो, इसलिए हरियाणा प्रदेश ने कृषि के साथसाथ पशुधन को भी जोड़ा है.

उन्होंने आगे कहा कि पहली बार देश में पशुपालन मंत्रालय बनाया गया है. पहले कृषि मंत्रालय का बजट ही 1,500 से 2,000 करोड़ रुपए होता था, परंतु मोदी सरकार ने अकेले एफएमडी में 13,500 करोड़ रुपए का बजट रखा है, जो अपनेआप में बहुत बड़ी सौगात है. ■

सूअर की नस्ल में सुधार

कृषि राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि देश में सूअर की नस्ल में सुधार के लिए भी काम किया जा रहा है. हरियाणा, पंजाब ने सूअर की नस्ल में सुधार करने की पहल की, परंतु इस की खपत दक्षिणी भारत में होती है, जब चारों ओर से प्रयास किए जाएंगे, तो हर नामुमकिन काम को मुमकिन बनाया जा सकेगा.

आय का रास्ता पशुपालन से ही संभव

कृषि राज्यमंत्री संजीव बालियान ने कहा कि अगर किसान की आमदनी दोगुनी हो सकती है, तो उस में पशुपालन का योगदान सब से आगे है. जमीन को हम बढ़ा नहीं सकते, लेकिन 2 गाय या भैंस को बढ़ा कर 4 जरूर कर सकते हैं. तो देश में किसानों की आय दोगुनी होने का रास्ता पशुपालन से ही निकलता है. इस लक्ष्य को पूरा करने में समय तो जरूर लग सकता है, लेकिन लक्ष्य पूरा जरूर होगा. किसी की गाय दोगुना दूध देने लग जाए तो आमदनी तो दोगुनी हो ही गई. यही सरकार का मकसद है.

पहल

फायदे में होगा किसान तो करेगा कई काम

झज्जर : गाय आधारित समन्वित कृषि प्रणाली मौडल के तहत झज्जर का कृषि विज्ञान केंद्र प्रदेश का पहला ऐसा केंद्र होगा, जहां इस प्रणाली का लाइव मौडल स्थापित हुआ है.

आने वाले दिनों में केंद्र में इस मौडल के तहत एग्रीकल्चर टूरिज्म होगा. किसानों के साथसाथ आम आदमी भी इस की उपयोगिता को समझ पाएंगे. प्रदर्शन इकाई में गायपालन समेत 14 अलगअलग इकाइयां बनेंगी, जहां एकसाथ कई काम किए जा सकते हैं.

कृषि विज्ञान केंद्र, झज्जर के समन्वयक डाक्टर उमेश शर्मा के मुताबिक, गाय आधारित समन्वित कृषि प्रणाली का मौडल झज्जर के बादली रोड स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर है. गायपालन प्रदर्शनी इकाई, केंचुआ खाद, बकरीपालन, बायो गैस, मधुमक्खीपालन इकाई लगा दी गई है.

इस इकाई के माध्यम से किसानों को समझाया जाएगा कि किस तरह से वे खेती के साथसाथ पशुपालन व दूसरे काम कर सकते हैं, जिन से उन की आमदनी में इजाफा हो सके.

उन्होंने आगे बताया कि प्रदेशभर के अलगअलग कृषि विज्ञान केंद्रों में लाइव प्रदर्शनी लगाई जाएगी, जहां किसानों को एग्रो टूरिज्म के माध्यम से इस बात की जानकारी दी जाएगी कि कैसे किसान कृषि को लाभ के क्षेत्र में बदल सकते हैं. जोखिम की संभावना कैसे कम करें वगैरह. इस योजना के तहत किसानों की नई सोच बनाई जा रही है. ■

नाउम्मीद

नहीं रास आई आसान किस्त योजना

प्रयागराज : दोआबा के किसानों को बिजली विभाग की आसान किस्त योजना रास नहीं आई. ब्याज में छूट व बिल जमा करने के लिए बनाई गई किस्त के बाद भी महज 35 फीसदी किसानों ने इस योजना का लाभ लिया.

जिले में तकरीबन 12,000 निजी नलकूप उपभोक्ता हैं, जिस में 9,000 किसानों पर 12 करोड़ से ज्यादा का बिजली बिल बकाया है.

प्रदेश सरकार ने किसानों को राहत देने के लिए आसान किस्त योजना लागू की, पर किसानों को रास नहीं आई. इस के तहत पंजीयन कराने वाले किसानों को ब्याज में छूट दी गई. साथ ही, बिल जमा करने के लिए आसान किस्त भी बनाई गई. पर इस के बाद भी किसान पंजीयन से दूरी बनाए हुए हैं.

भले ही किसानों के लिए यह योजना लाभकारी है, पर कई किसानों को यह योजना रास नहीं आ रही. किसानों को लगता है कि कहीं यह योजना उन के गले की फांस न बन जाए. ■

ईजाद

रसीले अंगूर की नई किस्म

नई दिल्ली : आघारकर अनुसंधान संस्थान यानी एआरआई, पुणे के वैज्ञानिकों ने रसीले अंगूर की एक नई किस्म तैयार की है, जो फफूंदरोधी होने के साथसाथ पैदावार के मामले में भी दूसरी किस्मों से बेहतर है.

वहीं दूसरी ओर कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि इस अंगूर की किस्म जूस, जैम और रैड वाइन बनाने के लिए काफी उपयोगी साबित हो सकती है, इसलिए किसान इसे ले कर काफी उत्साहित हैं.

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि एआरआई-516 नामक अंगूर की यह प्रजाति 2 किस्मों के अंगूर काटावाबा और विटिस विनिफेरा को मिला कर तैयार की गई है. यह बीजरहित होने के साथ ही फफूंदरोधी भी है. इन अंगूरों की एक खूबी यह भी थी कि इन के जींस एकजैसे थे. ये कीटरोधी होने के साथ ही अपनी बेहतर क्वालिटी के लिए भी जाने जाते हैं.

महाराष्ट्र एसोसिएशन फौर कल्टीवेशन साइंस और एआरआई के वैज्ञानिकों ने मिल कर इस की नई पौध तैयार की है. अंगूर की नई किस्म 110-120 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है. इस के लिए महाराष्ट्र, तेलंगाना, तमिलनाडु, पंजाब और पश्चिम बंगाल की जलवायु अनुकूल है. ■

बाधा

आम के निर्यात पर रुकावट

नई दिल्ली : कोरोना वायरस ने आम के निर्यात की राह को रोक दिया है, जिस से खाड़ी देश, यूरोपीय संघ के देशों के साथ अमेरिका में आम का निर्यात नहीं हो पा रहा है, जबकि इन देशों में भारतीय आम के स्वाद की जबरदस्त तलब रहती है.

कोरोना वायरस के तेजी से बढ़ते प्रकोप की वजह से दूसरे भारतीय कृषि उत्पादों को विलायत भेज पाना भी मुश्किल हो गया है, जबकि चीन में कोविड 19 के प्रकोप के बाद भारतीय कृषि उत्पादों के लिए वैश्विक बाजार में पर्याप्त संभावनाएं उभरी थीं.

कोरोना वायरस के खतरे की वजह से कृषि निर्यात को पूरा करना भी अब आसान नहीं रहेगा. चालू आम सीजन में निर्यात की राह में कोरोना वायरस बाधा बन कर खड़ा हो गया है, जबकि प्रीमियम क्लास में शुमार अलफांसो आम के कुल उत्पादन का 40 फीसदी विदेशों में बिकता है, जो महाराष्ट्र व गुजरात के किसानों की अतिरिक्त आमदनी का बड़ा साधन होता है. ■

आयोजन

बकरीपालन को बढ़ावा

रायपुर : छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग द्वारा शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, धमधा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत बकरीपालन में उद्यमिता

विकास एवं बकरी इकाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कृषि एवं पशुधन विकास मंत्री रविंद्र चौबे ने छत्तीसगढ़ में पशुधन के महत्त्व के बारे में जानकारी दी. उन्होंने बकरीपालन के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया.

उन्होंने छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय द्वारा पशुधन विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की. कार्यक्रम में कृषि मंत्री रविंद्र चौबे ने हितग्राहियों को बकरी इकाई, पशु चारा, पशु औषधि वगैरह का भी वितरण किया.

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय, दुर्ग के कुलपति डाक्टर एनपी दक्षिणकर समेत पशुपालन विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद थे. ■

सलाह

बढ़ा गेहूं का रकबा

छिंदवाड़ा : रबी के इस सीजन में जिले के किसानों ने गेहूं की बोवनी करने का रिकौर्ड बनाया है. अब तक जिले में 2 सालों के अंतराल में किसी फसल का रकबा एकदम से इतना नहीं उछला, जितना इस बार उछाल आया है.

साल 2019-20 में रबी के सीजन में जिले में मुख्य अनाज गेहूं का रकबा 2 लाख, 67 हजार हेक्टेयर तक पहुंच गया था, जो विभाग द्वारा तय किए गए लक्ष्य से एक लाख, 2 हजार हेक्टेयर ज्यादा था. यह रकबा 2018-19 की तुलना में 1 लाख, 11 हजार हेक्टेयर ज्यादा है.

जिले में इस बार तिलहन का रकबा भी 2018-19 की तुलना में काफी बढ़ा है. दलहन के रकबे में हालांकि लक्ष्य से इस बार कम बोवनी हुई है, लेकिन 2018-19 के 51 हजार हेक्टेयर के मुकाबले इस बार 53 हजार हेक्टेयर में दलहन बोई गई है. ■

आयोजन

जैविक खेती से बढ़ेगा मुनाफा

सोनीपत : जगदीशपुर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में पिछले दिनों एकदिवसीय फार्म प्रबंधन दिवस पर सोनीपत और्गैनिक किसान क्लब में जैविक खेती पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. इस की अध्यक्षता केंद्र के वरिष्ठ समन्वयक डाक्टर अनिल राठी ने की.

मुख्य अतिथि भारत भूषण त्यागी और 'पद्मश्री' कंवल सिंह चौहान रहे. भारत भूषण त्यागी ने कहा कि कृषि एक व्यवसाय है, न कि व्यापार. खेती करने के लिए प्रकृति की व्यवस्था को समझना अनिवार्य है. किसानों को मल्टीलेयर पद्धति को अपनाना होगा.

डाक्टर जेके नांदेल ने जैविक सब्जी व फलों के उत्पादन के बारे में बताया. मंच का संचालन प्राध्यापक कृष्ण वत्स ने किया. शिविर में जयकुंवार आतिल, रामकुमार त्यागी, रमाकांत त्यागी, संदीप दहिया, सुरेश कुमार, आशीष आतिल, सोनू धनखड़, संजीव, सरोज वगैरह ने हिस्सा लिया. ■

चार ● समाचार ● समाचार ● समाच

योजना

कृषि क्षेत्र में करें पढ़ाई

नई दिल्ली : कृषि क्षेत्र में मानव संसाधनों की कमी को पूरा करने के लिए इंडियन काउंसिल औफ एग्रीकल्चर रिसर्च ने विशेष योजना चालू की है. इस के तहत देश के सभी कृषि शिक्षण संस्थानों में ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट और पीएचडी छात्रों को विशेष आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाएगा. इस के अलावा ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट और पीएचडी में दाखिला लेने के लिए संयुक्त प्रवेश परीक्षा कराई जाएगी, जो 1 जून को औनलाइन होगी.

इस परीक्षा के जरीए विभिन्न कक्षाओं में कुल तकरीबन 7,000 से ज्यादा दाखिले किए जाएंगे, जबकि 40,000 से ज्यादा छात्रों के दाखिले राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों में दिए जाएंगे.

अखिल भारतीय स्तर की औनलाइन प्रवेश परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को 5,000 से ले कर 35,000 रुपए तक की स्कौलरशिप दी जाएगी.

एग्रीकल्चर सैक्टर में रोजगार की काफी संभावनाएं हैं. आईसीएआर इस के लिए क्वालिटी ऐजुकेशन पर ध्यान दे रहा है.

आईसीएआर के 4 प्रमुख रिसर्च संस्थानों मुंबई के फिशरीज, दिल्ली के आईएआरआई, बरेली के आईवीआरआई और करनाल के एनडीआरआई में होने वाले सभी दाखिले इसी प्रवेश परीक्षा के जरीए करवाए जाएंगे, जबकि राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों की 15 फीसदी अंडर ग्रेजुएट की सीटें और पोस्ट ग्रेजुएट और पीएचडी की 25 फीसदी सीटें इसी प्रवेश के सफल आवेदकों से भरी जाएंगी. इन में कुल 74 एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी हैं, जिन में 63 राज्यों की एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी है, जबकि 3 केंद्रीय विश्वविद्यालय और 5 डीम्ड यूनिवर्सिटी होंगी. इन में दाखिले के लिए रजिस्ट्रेशन चालू हो गया है. इस की अंतिम तारीख 31 मार्च निर्धारित की गई है. सभी तरह की परीक्षाएं 1 जून को होंगी, जबकि परीक्षाफल 15 जून को घोषित कर दिया जाएगा.

प्रवेश परीक्षा कराने का जिम्मा नैशनल टैस्टिंग एजेंसी को सौंपा गया है. उन विश्वविद्यालयों के छात्रों को प्रवेश परीक्षा में बैठने की सुविधा नहीं दी जा सकेगी, जिन की गुणवत्ता को आईसीएआर ने संदिग्ध बताया है. ■

ट्रेनिंग

किसानों को सिखाएंगे प्राकृतिक खेती

कुरुक्षेत्र : सरकार की तरफ से गुरुकुल में किसानों को अल्प बजट यानी कम बजट में प्राकृतिक खेती के बारे में ट्रेनिंग देने के लिए प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की गई. इस प्रशिक्षण केंद्र पर सरकार की तरफ से 2 करोड़, 11 लाख रुपए की राशि खर्च की गई.

इस प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने किया और कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने की. इस दौरान कार्यक्रम में हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, कैबिनेट के सभी मंत्री और विधायक समेत तमाम अधिकारी भी पहुंचे.

इस वर्कशौप में हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव संजीव कौशल, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक विजय सिंह दहिया, शिमला, हिमाचल प्रदेश से कृषि विभाग के निदेशक राजेश्वर चंदेल भी शामिल हुए.

इस वर्कशौप के बाद मुख्यमंत्री, राज्यपाल और कृषि मंत्री समेत सभी मंत्री व विधायकों ने गांव मिर्जापुर के पास तकरीबन 180 एकड़ प्राकृतिक कृषि फार्म को देखा.

इस केंद्र में हरियाणा राज्य एवं दूसरे प्रदेशों के किसानों और कृषि विस्तार से जुड़े अफसरों, कर्मचारियों, स्वयंसहायता समूह, एनजीओ, महिला उद्यमियों वगैरह के सदस्यों को प्राकृतिक कृषि व कम लागत की कृषि विधियों में पारंगत करने के लिए ट्रेनिंग देने की व्यवस्था की गई है.

इस केंद्र में ट्रेनिंग के काम के लिए प्रशिक्षण हाल, डाइनिंग हाल, किचन, 8 कमरे और एक कौंफ्रेंस रूम की व्यवस्था की गई है, जिस में एक समय में 50 ट्रेनिंग लेने वालों के रहने और ट्रेनिंग की सुविधा हासिल है. ■

संकट

कोरोना से फसल के गिरे दाम

नई दिल्ली : चीन के बाद अब ईरान और दूसरे देशों तक फैल चुके कोरोना वायरस के चलते पिछले एक महीने में चावल, कपास और सोयाबीन की कीमतों में भारी गिरावट आई है.

होलसेल बाजार में कपास और सूती धागों के दाम में 7 फीसदी, बासमती के दाम में 10 फीसदी और सोयाबीन के दाम में 5 फीसदी की गिरावट देखने को मिली है.

बासमती चावल और सोयाबीन मिल के निर्यातकों ने बताया कि

बिक्री में गिरावट ऐसे समय में आई है, जब 20 मार्च से ईरान में नए साल के मौके पर मनाए जाने वाले नौरोज पर्व के चलते शिपमैंट्स की तादाद बढ़ने की उम्मीद थी.

गुजरात के एक कौटन कारोबारी ने कहा कि चीन में कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते इस समय निर्यात के सौदे नहीं हो रहे हैं.

कोरोना आपदा के चलते ईरान को बासमती चावल भेजना बंद हो गया है. भारतीय बासमती चावल का ईरान सब से बड़ा खरीदार है और देश के कुल बासमती ऐक्सपोर्ट में उस का तकरीबन 30 फीसदी हिस्सा है.

ऐक्सपोर्ट के लिए यह पीक समय होता है, लेकिन इस समय कारोबार बिलकुल ठप है. तकरीबन 60,000 टन चावल बंदरगाहों पर ऐक्सपोर्ट के लिए पड़ा हुआ है. इसी तरह से सोयाबीन के निर्यातकों ने बताया कि ऐक्सपोर्ट में ऐसे समय में गिरावट आई है, जब उन्हें ईरान से मांग बढ़ने की उम्मीद थी. ■

चार ● समाचार ● समाचार ● समाच

सलाह

फलदार पौधों के फूलों पर कैमिकल का छिड़काव न करें

सोलन : नौणी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने बागबानों और किसानों को सलाह दी है कि यदि उन्होंने दिसंबर और जनवरी माह में अपने खेतों में गलीसड़ी गोबर की खाद व उर्वरक नहीं डाली है, तो इस काम को जल्दी ही पूरा कर लें. हाल ही में हुई तेज बारिश से खेतों में अच्छी नमी है. इस में इस समय भी यह काम किया जा सकता है.

इस के अलावा बागबान फूलों की अवस्था में पेड़ों पर कोई भी कैमिकल छिड़काव न करें, जो परागण क्रिया और मधुमक्खियों के काम को प्रभावित करता हो.

मध्य पर्वतीय क्षेत्रों के किसान ग्लेडियोलस व गेंदे की फसल के उत्पादन के लिए क्यारियों को तैयार करें. क्यारियों में तकरीबन 5 किलोग्राम प्रति वर्गमीटर के हिसाब से गोबर की खाद मिलाएं.

जो बागबान किसी वजह से पौधे न लगा पाए हों, वे पौधे लगाने का काम जल्दी निबटा लें. जमीन में अच्छी नमी बनी हुई है, इसलिए बागबान अपने बगीचों में फल पौधे के तौलिए बनाने का काम करते रहें.

यह जानकारी नौणी विश्वविद्यालय के नोडल अफसर डाक्टर सतीश भारद्वाज ने दी.

वहीं इस समय बाहरी परजीवियों की अधिकता पाई जाती है. इन से बचाव के लिए पशुओं के शरीर पर साइपरमेथ्रिन घोल 1 लिटर पानी में 2.2.5 मिलीलिटर मिला कर स्प्रे करें.

इस के अलावा शिशुपालन को बढ़ावा देने के लिए वसंत मौसम में अनुपूरक खुराक 1:1 के अनुपात में चीनी का घोल दें. साथ ही, मौनगृह की सफाई करें. वहीं रानी मक्खी रहित मौनवंशों को दूसरे मौनवंश में मिला दें. दुधारू पशुओं को उच्च गुणवत्ता का दाना 1 किलोग्राम प्रति 2 किलोग्राम दूध मिश्रण प्रतिदिन डालें. ■

जागरूकता

टिड्डियों का फिर आने का अंदेशा

उदयपुर : प्रदेश में आने वाले महीनों में फिर से फसलों पर टिड्डियों का हमला हो सकता है. इस से निबटने की अभी से यानी पहले से तैयारी रखने की जरूरत है.

इसी को ध्यान में रखते हुए कृषि अधिकारियों का जिलास्तरीय प्रशिक्षण शिविर कृषि विस्तार कार्यालय, गिर्वा में आयोजित किया गया.

कृषि अधिकारियों को प्रशिक्षण देने आए केंद्रीय टिड्डी नियंत्रण सैंटर, जालौर के सहायक निदेशक डाक्टर बीआर मीणा ने कहा कि मईजून और जूनजुलाई माह में टिड्डी दल पाकिस्तान के रास्ते फिर से राज्य में आ सकता है. ऐसे में ट्रैक्टर माउंटेड स्प्रे मशीनों, दवाओं व अन्य उपकरणों की उपलब्धता वगैरह की पहले से तैयारी कर लें, ताकि बाद में किसी तरह की परेशानी न आए.

डाक्टर बीआर मीणा ने यह भी कहा कि कृषि अधिकारी राजस्व अधिकारियों के साथ मिल कर टिड्डी के संभावित हमले के मद्देनजर कार्य योजना तैयार करें. अचानक आने वाली इस आपदा से कैसे निबटा जाए, इस की सारी तैयारी कर के रखें.

वहीं कृषि उपनिदेशक केएन सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण में बताया गया कि टिड्डी कब अंडा देती है व कौन सी अवस्था में फसलों पर हमला करती है, किस समय इन का राज्य में प्रवेश होता है और जब करोड़ों की तादाद में उड़ती हुई फसलों को पलक झपकते ही चट कर जाती हैं. ऐसे में फसलें बरबाद हो जाती हैं. टिड्डियां अभी पाकिस्तान में अंडे दे रही हैं और बारिश से पहले यह जैसलमेर और बाड़मेर हो कर राज्य में आने की संभावना है. ■

अवैध

अफीम की खेती पर चौतरफा गिरी गाज

खूंटी : अफीम की खेती के खिलाफ जिला पुलिस की मुहिम लगातार जारी है. अड़की, मुरहू व मारंगहादा थाना क्षेत्र में पुलिस ने 44 एकड़ भूमि पर लगी अफीम की खेती को तबाह किया.

इस दौरान अफीम की अवैध खेती करने के आरोप में पुलिस ने 3 गांव वालों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया.

यह जानकारी पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर ने दी. उन्होंने बताया कि इस साल 1 जनवरी से अफीम के खिलाफ चलाई जा रही मुहिम में अब तक 580 एकड़ भूमि पर लगी अफीम की खेती को बरबाद किया जा चुका है. साथ ही, अफीम के अवैध कारोबार और अफीम की खेती करने के आरोप में 10 से ज्यादा लोगों को पकड़ कर जेल भेजा जा चुका है. ■

गोष्ठी

आय बढ़ाने के लिए करें फूलोंसब्जियों की खेती

कानपुर देहात : उद्यान विभाग की ओर से विकास भवन में गोष्ठी आयोजित हुई. कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को आय बढ़ाने के लिए परंपरागत खेती छोड़ सब्जी व फूलों की खेती करने की सलाह दी.

गोष्ठी का शुभारंभ विधायक प्रतिभा शुक्ला ने फीता काट कर किया. उन्होंने कहा कि सरकार किसानों की आमदनी को दोगुना करने के लिए लगातार कोशिश कर रही है.

कृषि विज्ञान केंद्र, कानपुर से

आए वैज्ञानिक डाक्टर यूएन पांडेय ने कहा कि सब्जी व फूलों की खेती किसानों के लिए फायदेमंद है.

कृषि वैज्ञानिकों द्वारा लाब और गेंदा की खेती करने के बारे में किसानों को जानकारी दी गई. साथ ही, इन फसलों में लगने वाले कीटों और रोगों से बचाव के बंदोबस्त बताए गए.

डाक्टर आरए त्रिपाठी ने बागबानी के तहत अमरूद, नीबू, आम, किन्नू की खेती के बारे में जानकारी दी, वहीं उपकृषि निदेशक विनोद कुमार यादव ने किसानों को सरकार की योजनाओं के बारे में बता कर जागरूक किया.

जिला उद्यान अधिकारी सुभाष चंद्र ने फूलों व सब्जियों की खेती के लिए चल रही योजनाओं के बारे में बताया. इस मौके पर भूमि संरक्षण अधिकारी अशोक कुमार, डाक्टर अरविंद कुमार, अरुण कुमार सिंह ने किसानों को जानकारी दी. किसानों ने फूलों व सब्जी की प्रदर्शनी लगाई थी, वहीं कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी लगा कर उन की उपयोगिता के बारे में बताया. ■

सहूलियत

कृषि छात्र पढ़ सकेंगे विदेशी भाषा

रुद्रपुर : जीबी पंत कृषि विश्वविद्यालय में छात्र अब फ्रैंच, जरमन वगैरह विदेशी भाषाओं का भी प्रशिक्षण ले सकेंगे. विश्वविद्यालय में इस केंद्र का उद्घाटन किया गया.

जीबी पंत कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा की मजबूती के लिए नया प्रोजैक्ट शुरू किया जा रहा है. इसे नैशनल एग्रीकल्चरल हायर ऐजुकेशन प्रोजैक्ट यानी नाहेप व विश्वविद्यालय केंद्र का नाम दिया गया है.

इस भवन का उद्घाटन नाहेप के राष्ट्रीय निदेशक डाक्टर आरसी अग्रवाल, कुलपति डाक्टर तेज प्रताप व परियोजना अधिकारी डाक्टर शिवेंद्र कश्यप ने संयुक्त रूप से किया. इस दौरान नाहेप की आधिकारिक वैबसाइट भी लौंच की गई.

नाहेप के राष्ट्रीय निदेशक डाक्टर आरसी अग्रवाल ने देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों में चल रहे अनुसंधान काम के बारे में बताया. परियोजना अधिकारी डाक्टर शिवेंद्र कश्यप ने कहा कि केंद्र की सुविधाएं संकाय सदस्यों के साथसाथ छात्रों की शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करेगी.

परियोजना के लीडर के रूप में कुलपति डाक्टर तेज प्रताप ने कहा कि पंतनगर आने वाले दिनों में एक रोल मौडल के रूप में विकसित होगा. इस दौरान राष्ट्रीय समन्वयक डाक्टर पी. रामसुंदरम, सुधीर चड्ढा ने भी अपने विचार रखे. ■

पहल

नुकसान का जायजा लेने पैदल चले कृषि मंत्री

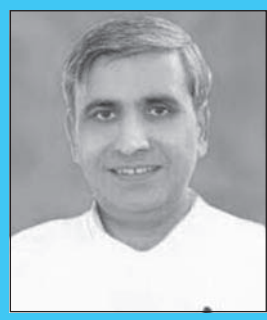

बरवाला : प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण व पशुपालन एवं डेरी मंत्री जयप्रकाश दलाल ने बरवाला हलके के गांव ढाणी गारण समेत दूसरे इलाकों में पड़े ओले से फसलों में हुए नुकसान का निरीक्षण किया. उन्होंने कहा कि जिन इलाकों में ओला पड़ने से फसलों को नुकसान हुआ है, वहां सरकार द्वारा स्पैशल गिरदावरी कराई जाएगी.

कृषि मंत्री जेपी दलाल बरवाला में ढाणी गारण रोड पर खेतों में गए, जहां वे विधायक जोगीराम सिहाग के साथ आधा किलोमीटर पैदल भी चले. कृषि मंत्री जेपी दलाल 2 बार गाड़ी से भी उतरे और उन्होंने रुक कर खेतों में जा कर नुकसान का निरीक्षण किया.

इस दौरान विधायक जोगीराम सिहाग, किसान सभा प्रधान सुशील आनंद और इलाके के किसान भी साथ थे. उन्होंने सड़क के दोनों ओर खेतों में सरसों और गेहूं की फसल में हुए नुकसान का जायजा लिया.

गांव के सरपंच सूरत सिंह द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कृषि मंत्री जेपी दलाल गए. इस दौरान ढाणी गारण के किसानों ने जन स्वास्थ्य विभाग बरवाला द्वारा बनाए गए सीवरेज वाटर ट्रीटमैंट प्लांट से निकलने वाले गंदे पानी का मुद्दा उठाया. यह गंदा पानी आसपास के खेतों में फैला हुआ है. इतना ही नहीं, वातावरण भी दूषित हो रहा है.

विधायक की मारफत बरवाला क्षेत्र के किसानों ने कृषि मंत्री को एक ज्ञापन सौंपा. किसान सभा के सदस्यों ने ज्ञापन में कहा कि भारी ओले पड़ने से सरसों, गेहूं, चना, सब्जी और बागबानी में 70 फीसदी तक नुकसान हुआ है. इस वजह से किसानों को भारी माली नुकसान हुआ है. इसलिए सभी फसलों की विशेष गिरदावरी करवा कर चाहे जिन का बीमा है या जिन फसलों का बीमा नहीं है, उन को भी 40,000 रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिया जाए.

कृषि मंत्री जेपी दलाल ने फसलों में हुए नुकसान के बारे में जानकारी ली और कहा कि प्रभावित किसान अपने फार्म भर कर संबंधित बीमा कंपनियों व कृषि अधिकारियों को दें, ताकि उन की समय से तसदीक कराई जा सके और नुकसान का समुचित मुआवजा दिलाया जाएगा.

इस मौके पर विधायक जोगी राम सिहाग, कृषि उपनिदेशक डाक्टर विनोद कुमार, एसडीएम राजेश कुमार, उपमंडल कृषि अधिकारी पवन कुमार, मार्केट कमेटी के चेयरमैन रणधीर धीरू, किसान सभा प्रधान सुशील आनंद, वाइस चेयरमैन रामफल गुराना, कारोबारी नेता मुनीष गोयल, प्रदीप कुमार ढाणी गारण, सरपंच प्रतिनिधि सूरत सिंह सहित काफी तादाद में किसान और गांव वाले उपस्थित रहे. ■

संगोष्ठी

एफएफपी परियोजना के तहत कृषक संगोष्ठी

मुरैना : मध्य प्रदेश के मुरैना में आयोजित एफएफपी प्रोजैक्ट के तहत कृषक संगोष्ठी, मध्य प्रदेश, नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री ने वीडियो कौंफ्रैंसिंग के माध्यम से संथा गांव, मुरैना जिला, मध्य प्रदेश में आयोजित कृषक संगोष्ठी का उद्घाटन किया.

उन्होंने किसानों से किसानों के संगठन (एफपीओ) बनाने का आग्रह किया, जो देश के कृषि क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं. मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने सिंचाई की प्रमुख जल संबंधी समस्याओं पर अपनी परेशानी जाहिर की, जैसे कि चंबल क्षेत्र के ज्यादातर किसान बाढ़ सिंचाई का उपयोग करते हैं, जिस के चलते कम उपज, उपज की घटती

गुणवत्ता, घटती जल तालिका और मिट्टी की सेहत वगैरह में भी सुधार को अपनाने पर बल दिया. जल उत्पादकता में सुधार के लिए बौर्डर स्ट्रिप, फरो, दबाव के माध्यम से सिंचाई के तरीके वगैरह अपनाने के लिए कहा.

अपने संबोधन में प्रोफैसर एसके राव, कुलपति, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश ने उच्च लाभ के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली, संरक्षित खेती, सब्जी उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन और कृषि आधारित उद्यमों को बढ़ावा देने पर जोर दिया.

उन्होंने एफपीओ से जुड़े कमोडिटी और समुदाय आधारित समूह खेती पर किसानों के लिए एकत्रीकरण मौड्यूल विकसित करने का आग्रह किया, वहीं प्रोफैसर वीएस तोमर, पूर्व कुलपति, आरवीएसकेवी ने जोर दिया कि कम मूल्य की फसल को उच्च मूल्य वाली फसल में विविधता लाने से साल 2020 तक किसानों की आमदनी को दोगुना करने के मकसद को हासिल करने में मदद मिल सकती है.

इस कार्यक्रम में 2,000 से ज्यादा किसान, ग्रामीण युवा, एआरएस प्रशिक्षु, वरिष्ठ अधिकारी और विभिन्न गणमान्य नागरिक शामिल हुए. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ व सुनील शर्मा

सवाल : धान की खेती करने की श्री विधि क्या है? क्या इस विधि को हम भी कर सकते हैं? इस के खास फायदे क्या हैं? कृपया बताएं.

–**रामफल**, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

जवाब : धान के एसआरआई यानी 'सिस्टम औफ राइस इंटेनसिफिकेशन' को श्री विधि भी कहते हैं. इस तरीके से धान की खेती करने पर बीज, खाद, पानी की कम जरूरत पड़ती है और पैदावार ज्यादा मिलती है.

श्री तकनीक से बोआई करने पर धान के पौधे की जड़ों का विकास ज्यादा होता है और पानी को खेत में खड़े रखने की जरूरत नहीं पड़ती है. दुनिया के अनेक देशों में श्री विधि को अपनाया जा रहा है.

श्री विधि में 8–10 दिन पुरानी 2 पत्ती वाली पौधे की मिट्टी के साथ रोपाई की जाती है. इस से ज्यादा संख्या में कल्ले निकलते हैं. पौधों को नर्सरी से बहुत ही एहतियात के साथ मिट्टी के साथ निकाल कर बिना जड़ धोए मिट्टी सहित खेत में रोपाई कर देते हैं.

एक हेक्टेयर खेत में श्री विधि से बोआई करने के लिए सब से पहले बढ़िया नर्सरी होनी चाहिए.

नर्सरी बनाने के लिए 12 से 15 सैंटीमीटर ऊंची, सवा मीटर चौड़ी और अपनी जरूरत के मुताबिक लंबाई वाली क्यारियां बना लेनी चाहिए. इन क्यारियों में अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद को भुरीभुरी मिट्टी के साथ मिला कर मोटी परत बिछा देनी चाहिए.

एक हेक्टेयर खेत के लिए 5 किलोग्राम बीज की नर्सरी काफी रहती है. बाद में फिर गोबर की खाद व मिट्टी मिला कर वह मिश्रण उस में फैला देते हैं और नर्सरी की फव्वारा से सिंचाई कर लगातार नमी बनाए रखते हैं.

ज्यादा जानकारी के लिए आप अपने जिले के कृषि विज्ञान केंद्र में संपर्क करें.

***

सवाल : रामदाना की खेती के बारे में बढ़िया किस्मों की जानकारी दें.

–**आलोक**, देहरादून, उत्तराखंड

जवाब : रामदाना बहुत ही पौष्टिक अनाज है. इसे चौलाई, मूसा वगैरह नामों से भी जाना जाता है. रामदाना की बढ़िया किस्में पीआरए–1,2,3, वीएल चुआ–44 व अन्नपूर्णा वगैरह हैं. ये किस्में 115 से 135 दिन में तैयार हो जाती हैं.

पहाड़ों पर इस की बोआई 15 मई से 15 जून तक की जा सकती है. एक हेक्टेयर खेत की बोआई के लिए डेढ़ किलोग्राम बीज काफी रहता है. अच्छी पैदावार के लिए 40 किलोग्राम नाइट्रोजन और 25 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करें.

खेत की तैयारी के समय अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद की 10–15 टन मात्रा प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करने पर काफी अच्छे नतीजे मिलते हैं.

खरपतवारों को काबू में रखने के लिए समयसमय पर निराईगुड़ाई करते रहना चाहिए. रामदाना की फसल को पर्णजालक नामक कीट काफी नुकसान पहुंचाता है. इस कीट की सूंड़ी पत्तियों को खा कर नुकसान पहुंचाती है. इस कीट की रोकथाम के लिए उचित कीटनाशक डालें.

इस की खेती की ज्यादा जानकारी के लिए आप अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र से सही जानकारी ले सकते हैं.

***

दिक्कत आप की दवा *फार्म एन फूड* की

खेतीकिसानी से जुड़ी अपनी समस्याएं हमें लिख कर भेजें. आप की समस्याओं का समाधान एक्सपर्ट करेंगे. समस्या के साथ अपना नाम व पता जरूर लिखें. आप हमें SMS भी कर सकते हैं.

सवाल जवाब विभाग, फार्म एन फूड
ई–8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–55
ई–मेल: farmnfood@delhipress.in
SMS के लिए नंबर : 08447177778

किसान के साथ राजनीति न हो

'फार्म एन फूड' पत्रिका के 1 मार्च, 2020 अंक में छपी संपादकीय अच्छी लगी. आम किसानों को ध्यान में रख कर इस बार देश के आम बजट में जगह दी गई है, जो काफी अच्छा लगा. इस बजट में किसानों के लिए एक ऐसी रेल का ऐलान किया गया है, जो किसानों के जल्दी खराब होने वाले उत्पादों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया जा सके. वहीं सिंचाई और खाद्य भंडारण के लिए कोल्ड स्टोरेज बढ़ाने की भी बात है, परंतु यह कहना सही है कि आम किसानों के लिए बनाया गया बजट राजनीति से दूर हो.

मुख्य लेख 'बंजर जमीन में आंवला की खेती से मुनाफा' पढ़ कर लगा कि किसान चाचा मधुर ने एमबीए करने के बाद नौकरी की और फिर नया करने की चाह उन्हें खेती की ओर ले गई. वाकई किसानों को उन से सीख ले कर अपनी खेती में उन की बताई गई विधि आजमाएं और ज्यादा मुनाफा लें.

इस के अलावा लेख 'मशरूम की खेती से करें कमाई' में काफी अच्छी जानकारी दी गई है. अब तो मशरूम भी महंगी सब्जी मानी जाती है. इस की मांग भी दिनोंदिन बढ़ रही है. यही वजह है कि मशरूम की खेती अब घाटे का सौदा नहीं मुनाफे का सौदा साबित हो रही है. ज्यादातर किसान मशरूम की खेती कर उस की प्रोसैसिंग कर के ज्यादा कमाई कर रहे हैं

– **रामरति कुमार,** मुरादाबाद.

***

आम बजट में किसान अहम

'फार्म एन फूड' पत्रिका के 1 मार्च, 2020 अंक में छपी संपादकीय में किसानों के कर्ज को ले कर जो समस्या रखी है, उस पर कुछ खास नहीं कहा. कर्ज का होना किसानों के लिए सहूलियत नहीं, बल्कि एक ऐसा बोझ है, जिसे ब्याज सहित चुकाना पड़ता है. अगर किसान कर्ज चुका नहीं पाता है तो आत्महत्या करने तक को मजबूर हो जाता है.

लेख 'चारा बीज में सहायक राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड' पढ़ कर काफी हद तक नई जानकारी मिली. उम्मीद है कि पशुपालक अपने जानवरों के लिए राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड की मदद ले कर अपनी आमदनी में इजाफा करेंगे.

लेख 'बारानी इलाकों में उगाएं कसावा' जानकारी से भरपूर लगा, वहीं 'मिट्टी की जांच कराएं पैदावार बढ़ाएं' में ऐसी जानकारी दी गई है, जो आम किसानों के लिए फायदेमंद है. अगर किसान इन बातों को ध्यान में रख कर खेती करेंगे तो निश्चित ही अच्छी पैदावार हासिल होगी और मुनाफा भी डेढ़ से दोगुना होने की उम्मीद है.

– **दिनेश सिंह चौहान,** इलाहाबाद.

***

बड़े काम की पत्रिका

'फार्म एन फूड' पत्रिका का 1 मार्च, 2020 अंक पढ़ा. संपादकीय में आम बजट में किसानों की परेशानियों की जो चर्चा की गई है, काफी चिंताजनक है. वहीं इस में दिए गए सभी लेख काफी जानकारी भरे लगे. उम्मीद है कि ऐसे ही लेख हमें आगे भी पढ़ने को मिलते रहेंगे.

– **रामकिशोर यादव,** मेरठ.

***

पत्रिका में छपे लेखों व बातों पर आप की राय आमंत्रित है. अगर आप किसी खास लेख/लेखक के बारे में कुछ और कहना या जानना चाहते हैं, तो कृपया हमें इस पते पर लिखें : खतोकिताबत, ***फार्म एन फूड,*** ई–8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–110055. या SMS द्वारा इस फोन नंबर 08447177778 पर भेजें.

फायदेमंद भिंडी

✻ शैलेंद्र सिंह

हमारे देश में भिंडी सब से ज्यादा लोकप्रिय सब्जी मानी जाती है. इस की सब्जी को कई तरह से तैयार कर के पकवान के रूप में इस्तेमाल किया जाता है. भिंडी की सब्जी के बारे में सभी लोग जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि इस की जड़ और तना भी बहुत ही काम का होता है. भिंडी की जड़ व तना गुड़ और शक्कर को साफ करने के भी काम आता है.

गुड़ बनाते समय भिंडी की जड़ और तना उस में डालने से गुड़ का रंग साफ हो जाता है. इस का असर गुड़ के स्वाद पर भी नहीं पड़ता. आमतौर पर गुड़ और शक्कर को साफ करने के लिए फिटकरी का इस्तेमाल किया जाता है. सही अनुपात में फिटकरी न पड़ने से गुड़, शक्कर का स्वाद कसैला हो जाता है.

भिंडी के तना, जड़ का इस्तेमाल करने से गुड़, शक्कर का स्वाद खराब नहीं होता. इतना ही नहीं, गुड़ में एक कुरकुरापन भी आता है.

भिंडी की खेती

भिंडी की खेती करने के लिए सब से पहले खेत को सही से तैयार करना चाहिए. भिंडी के लिए उपजाऊ, साधारण हलकी और फालतू पानी निकल जाने वाली मिट्टी सही रहती है. बोआई में लाइन से लाइन की दूरी 45 सैंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 25 सैंटीमीटर रखनी चाहिए. खेत की तैयारी के लिए 6 टन सड़ी हुई कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल करना चाहिए. कैमिकल खाद का इस्तेमाल जरूरत के हिसाब से करें.

पहली बार खाद को बीज उगने के 2-3 दिन बाद डालें. इस के बाद 30, 60 और 90 दिन पर खाद का इस्तेमाल करना चाहिए. तुड़ाई शुरू होने के 20 दिन बाद मैग्नीशियम सल्फेट, जिंक, बोरोन का छिड़काव करने से भिंडी का फल सही आकार में रहता है.

भिंडी को सफेद मक्खी, मावा, चुरदा और फल छेदक कीट नुकसान पहुंचाते हैं. फफूंद भी इस को नुकसान पहुंचा सकती है. इन से भिंडी को बचाने के लिए कांफीडर 200, एक्टारा, एमालम्स एवौट बाईलेटन और थायोवीट जैसे कीटनाशकों का इस्तेमाल करना चाहिए. तुड़ाई के बाद भिंडी को खेत की मिट्टी में नहीं रखना चाहिए.

भिंडी के फल को छायादार जगह पर किसी मुलायम चीज पर रखना चाहिए. अगर भिंडी को कुछ समय रोकना हो तो इस को इस तरह से रखें कि ताजा हवा मिलती रहे. इस से भिंडी के खराब होने का खतरा नहीं रहता है. मिट्टी लगने के बाद भिंडी के खराब होने का खतरा बढ़ जाता है. मंडी ले जाते समय इसे किसी दूसरी सब्जी के साथ नहीं रखना चाहिए. कुछ लोग भिंडी को ताजा रखने के लिए तुड़ाई के बाद उस पर पानी का छिड़काव करते हैं. पानी रुकने से भिंडी के खराब होने का खतरा बढ़ जाता है. ■

खेती की जमीन में सूक्ष्म पोषक

* संवाददाता

बढ़वार हासिल करने के लिए पौधों को अनेक तत्त्वों की जरूरत होती है, जिन को वे मिट्टी, पानी व हवा से लेते हैं. लेकिन सभी तत्त्व पौधों की खुराक का हिस्सा नहीं होते. वे तत्त्व, जो पौधों की खुराक होते हैं, उन्हें पोषक तत्त्व कहते हैं.

मशहूर कृषि वैज्ञानिक आरनोन पौधों के लिए पोषक तत्त्वों की जरूरत को कुछ इस तरह बताते हैं, वे पोषक तत्त्व, जिन की कमी होने पर पौधे अपना जीवन चक्र पूरा नहीं कर पाते हैं.

पौधों के लिए जरूरी पोषक तत्त्व

खास पोषक तत्त्व : इस में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटैशियम आते हैं. पौधों को इन्हीं 3 पोषक तत्त्वों की सब से ज्यादा मात्रा की जरूरत होती है. इसलिए इन्हें खास पोषक तत्त्व कहते हैं. खेती में सब से ज्यादा इन्हीं पोषक तत्त्वों वाली खाद का इस्तेमाल होता है.

गौण पोषक तत्त्व : इस में कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम व सल्फर तत्त्व आते हैं. इन्हें पौधों के लिए पर्याप्त मात्रा में मिलना चाहिए. लेकिन इन का काम खास पोषक तत्त्वों के मुकाबले कम होता है.

सूक्ष्म पोषक तत्त्व : इस में आयरन, जिंक, कौपर, मैंगनीज, बोरोन, मोलिब्डेनम, क्लोरीन व कोबाल्ट तत्त्व आते हैं. पौधों को इन पोषक तत्त्वों की बहुत ही कम मात्रा यानी 1 पीपीएम से भी कम की जरूरत होती है. इसलिए इन्हें सूक्ष्म पोषक तत्त्व कहते हैं.

लेकिन खास पोषक तत्त्वों के साथसाथ सूक्ष्म पोषक तत्त्व भी पौधों के विकास व बढ़ोतरी के लिए जरूरी होते हैं.

सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की कमी से न केवल पौधों की बढ़वार रुक जाती है, बल्कि वे अपना जीवन चक्र भी पूरा नहीं कर पाते हैं. सूक्ष्म पोषक तत्त्व पौधों के पोषण के लिए जरूरी एंजाइम को क्रियाशील बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं और पौधों को बीमारियों से बचने व उन से लड़ने की ताकत देते हैं.

आइए जानें, सूक्ष्म पोषक तत्त्व पौधों में क्याक्या करने की कूवत रखते हैं:

जिंक : यह पौधों की जिंदगी में होने वाली जरूरी प्रतिक्रियाओं में उत्प्रेरक का काम करता है और औक्सीकरण की क्रिया को नियमितता प्रदान करता है. यह अनेक एंजाइम्स के उपचयन में भाग लेता है और प्रोटीन संश्लेषण में सहायक होता है. पौधों में पाए जाने वाले हार्मोनों के लिए यह जैविक संश्लेषण में काम आता है और पौधों के द्वारा फास्फोरस के उपापचय में सहायक होता है. यह पौधों द्वारा कार्बोहाइड्रेट के उपयोग को भी प्रभावित करता है.

जिंक की कमी से पौधों में पानी की मात्रा कम हो जाती है. जिंक पौधों में प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन के उपचयन में मदद करता है. जिंक फूल व फलों के बनने और फसलों के जल्दी पकने में मददगार होता है. पौधों में जिंक की कमी के लक्षण ये होते हैं:

- पौधों की पत्तियां एकदम छोटी हो जाती हैं.
- फास्फोरस बढ़ने से जिंक की कमी बढ़ती है.
- धान में खैरा बीमारी इस की कमी का खास लक्षण है.

लोहा : पौधों को इस की कम मात्रा में जरूरत होती है, लेकिन पौधों के पोषण में इस का काफी महत्त्व है. यह पौधों में क्लोरोफिल, प्रोटीन व कोशिका विभाजन के लिए जरूरी और पौधों के विभिन्न एंजाइम्स के बनने का खास घटक है. इस की कमी के लक्षण ये होते हैं:

- लोहे की कमी से पौधों में हरेपन की कमी दिखाई देती है.
- इस की कमी के लक्षण पौधे की शिराओं के बीच के भागों में ही सीमित रहते हैं.
- पत्तियों पर पीले रंग की लंबी धारियां दिखाई देती हैं.
- पौधों की बढ़वार कम होती है.
- पौधा सफेद दिखाई देने लगता है.
- फल अधपके गिर जाते हैं.

मैंगनीज : पौधों के पोषण में जरूरी यह तत्त्व पौधों की बढ़वार और पौधों के उपापचय के लिए जरूरी है. यह नाइट्रेट और क्लोरोफिल के बनने में मददगार होता है. यह कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन उपापचय में जरूरी होता है. यह एंजाइम के उत्प्रेरक के रूप में भी काम करता है. पौधों में मैंगनीज की कमी के लक्षण ये होते हैं:

- मैंगनीज की कमी के चलते नई व पुरानी पत्तियों में कई तरह के हरिमाहीन धब्बे देखे जा सकते हैं.
- इस की कमी से पत्तियों का रंग हलका हो जाता है. साथ ही, पौधों की पत्तियों और जड़ों में चीनी की मात्रा में कमी आ जाती है.
- धान्य फसलों की पत्तियां भूरी हो जाती हैं और उन में ऊतक गलन बीमारी पैदा हो जाती है.

सूक्ष्म पोषक तत्त्वों के खास जरीए व उन के इस्तेमाल की मात्रा

सूक्ष्म पोषक तत्त्व	सूक्ष्म पोषक तत्त्व का फीसदी	मात्रा प्रति हेक्टेयर (किलोग्राम में)	पानी में घोल बना कर इस्तेमाल (घोल का फीसदी)
जिंक की आपूर्ति के लिए			
जिंक सल्फेट हैप्टाहाइड्रेट जिंक सल्फेट मोनोहाइड्रेट जिंक औक्साइड जिंक ईडीटीए	21 33 50–70 12	2–10	0.5 जिंक सल्फेट व 0.25 फीसदी बुझा हुआ चूना
कौपर की आपूर्ति के लिए			
कौपर सल्फेट पेंटाहाइड्रेट कौपर सल्फेट मोनोहाइड्रेट कौपर औक्सीसल्फेट कौपर ईडीटीए	24 35 15–53 9–13	2.5–12	0.1–0.4 कौपर सल्फेट व 0.05 से 0.2 फीसदी बुझा हुआ चूना
मैंगनीज की आपूर्ति के लिए			
मैंगनीज सल्फेट ट्राईहाइड्रेट मैंगनीज सल्फेट मोनोहाइड्रेट मैंगनीज औक्सीसल्फेट मैंगनीज डाईऔक्साइड मैंगनीज ईडीटीए	26–28 30–32 40–49 55–65 5–12	3–10	0.25–0.6 मैंगनीज सल्फेट व 0.125 से 0.3 फीसदी तक बुझा हुआ चूना
आयरन की आपूर्ति के लिए			
फैरस सल्फेट फैरिक सल्फेट फैरिक क्लोराइड आयरन ईडीटीए	19 17 5–18 12	4–8	0.25–0.5 फेरस सल्फेट व 0.125 से 0.25 फीसदी बुझा हुआ चूना
बोरोन की आपूर्ति के लिए			
बैरेक्स बोरिक एसिड सैलूबोर	10.5 17.5 19	0.5–2.0	0.2 बैरेक्स
मोलिब्डेनम की आपूर्ति के लिए			
सोडियम मोलिब्डेट	37–39	0.2–0.3	0.05–0.10 सोडियम मोलिब्डेट

नोट : *सूक्ष्म व दूसरे पोषक तत्त्वों की आपूर्ति के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए अपने जिले के कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिकों से संपर्क करें.*

- इस की कमी के लक्षण पहले पौधों की नई पत्तियों पर दिखाई देते हैं.

तांबा : यह प्रकाश संश्लेषण व श्वसन क्रिया में भाग लेता है. फफूंदी से पैदा होने वाली बीमारियों की रोकथाम में इस का खास रोल होता है. यह औक्सीकरण अवकरण की क्रिया में अहम काम व पौधों में विटामिन ए के बनने में मदद करता है. पौधों में तांबे की कमी के लक्षण ये होते हैं:

- तांबे की कमी से पौधों की बढ़वार रुक जाती है.
- सरसों वर्ग के पौधों की शिराओं व बीच में धब्बे पड़ जाते हैं.
- नई पत्तियों में क्लोरोसिस रोग हो जाता है.

बोरोन : यह आरएनए व डीएनए के संश्लेषण में योगदान देता है और कोशिकाओं में पानी पर काबू करता है. साथ ही, दलहनी फसलों में यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण में काफी मददगार होता है. पौधों में बोरोन की कमी के लक्षण ये होते हैं:

- बोरोन की कमी से जहां दलहनी फसलों की जड़ों पर गांठों का पूरा विकास नहीं हो पाता, वहीं प्रजनन अंगों का विकास भी प्रभावित होता है.
- बोरोन की कमी होने पर पौधे नाइट्रोजन का उपयोग भी कम कर पाते हैं.
- पौधों के सिरे रंगहीन व मुड़े हुए हो जाते हैं.
- पार्श्व कलिकाएं विकसित नहीं होतीं.
- इस की कमी से पत्तियों पर सफेद धब्बे व धारियां पाई जाती हैं.
- फूल व फल बनने की दर कम हो जाती है.
- इस की कमी से पत्तियों में झुर्रियां, कड़ापन व हरिमाहीनता वगैरह के लक्षण पैदा हो जाते हैं.

मोलिब्डेनम : यह चीनी और विटामिन सी बनाने में मददगार होता है और फास्फोरस के उपापचय में भाग लेता है. दलहनी फसलों की जड़ग्रंथियों में पाए जाने वाले बैक्टीरिया द्वारा हवा में मौजूद नाइट्रोजन के स्थिरीकरण में मोलिब्डेनम का खास रोल रहता है. यह फूलों की बढ़वार में मददगार होता है. मोलिब्डेनम के पौधों में कमी के लक्षण ये होते हैं:

- इस की कमी से पौधों में नाइट्रोजन की कमी हो जाती है.
- पत्तियों के किनारे झुलस जाते हैं.
- तने व पत्ती पीली व धब्बेदार हो जाती है.
- दलहनी फसलों की जड़ों में ग्रंथि कमजोर रह जाती है.
- फूल निकलने में कमी आ जाती है.

क्लोरीन : यह कोशिका रस के संतुलन में मददगार है व एंथोसाइनिंस का संघटक पदार्थ है. यह पौधों की प्रकाश अपघटन की क्रिया में भाग लेता है. क्लोरीन के पौधों में कमी के लक्षण ये होते हैं:

- इस की कमी होने पर फल नहीं बनते हैं.
- मक्के के पौधे सूख जाते हैं.
- बरसीम की पत्तियां कटने लगती हैं.
- पौधों में हरिमाहीनता पैदा हो जाती है.

सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की कमी को हम कैमिकल खादों का इस्तेमाल कर कम कर सकते हैं. विभिन्न प्रकार के कैमकल खादों का इस्तेमाल दिए गए बौक्स के अनुसार करें. ■

तत्त्वों का रखें ध्यान

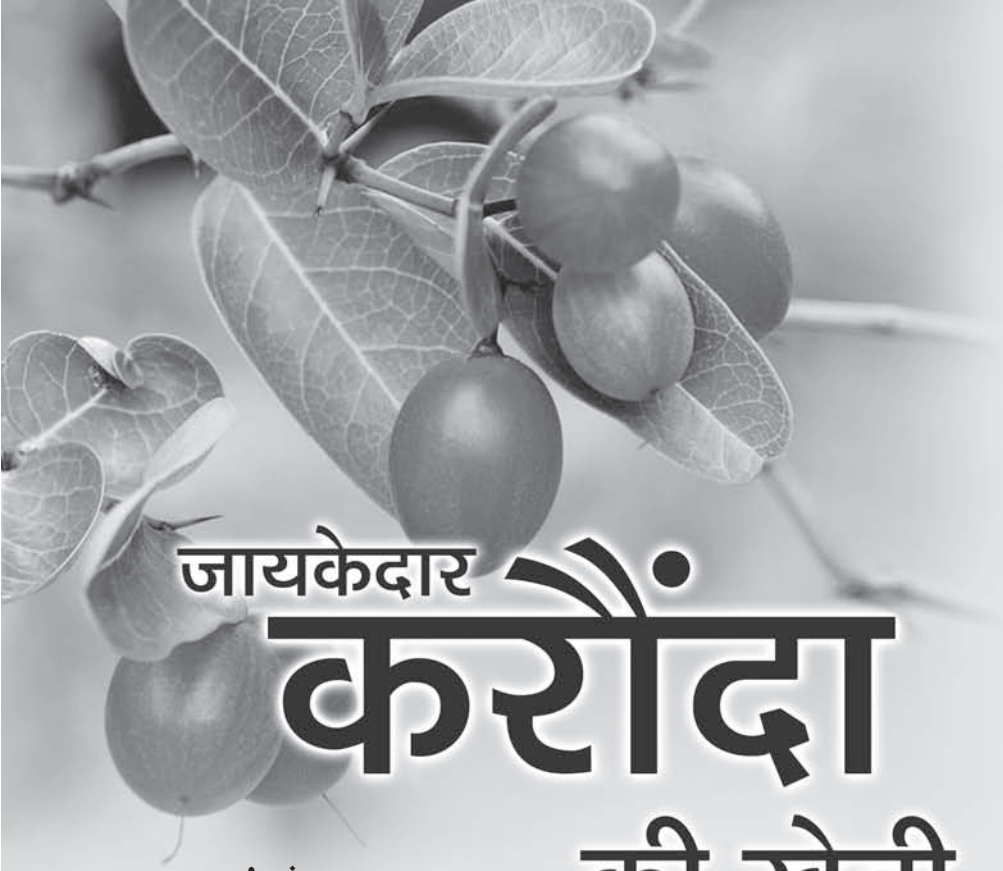

जायकेदार करौंदा की खेती

✻ संवाददाता

***करौंदा** को अकसर बाड़ के रूप में लगाया जाता है, क्योंकि इस की कांटेदार झाड़ियां जानवरों से आप के बाग को बचाती हैं. इस के पके फल में बहुत से गुण भी होते हैं.*

करौंदे के कांटेदार और झाड़ीनुमा पौधे को अकसर बाग के चारों तरफ बाड़ के रूप में लगाया जाता है. पौधे बड़े हो जाने पर घनी कांटेदार झाड़ी बन जाते हैं, जानवरों से बाग की हिफाजत करते हैं. पौधों की ऊंचाई 3 मीटर या इस से ज्यादा होती है.

करौंदा एक झाड़ी है, जो ज्यादा जाड़े वाले इलाकों को छोड़ कर उपोष्ण व उष्ण आबोहवा में लगाया जा सकता है. कम उपजाऊ मिट्टी में इसे आसानी से उगाया जा सकता है.

करौंदा नमकीन व खार वाली मिट्टी के प्रति कुछ हद तक सहनशील है, लेकिन ज्यादा बारिश व बाढ़ वाले इलाके इस के लिए सही नहीं हैं. करौंदे पर बीमारियों व कीड़ों का हमला नहीं होता है.

करौंदा पैक्टिन, कार्बोहाइड्रेट्स और विटामिन सी का अच्छा जरीया है. पके हुए करौंदे में कैलोरी 745 से 753 फीसदी, नमी 83.7 फीसदी, प्रोटीन 0.39 फीसदी, फैट 2.57 से 4.63 फीसदी, चीनी 7.35 से 11.58 फीसदी, रेशा 0.62 से 1.8 फीसदी, खनिज लवण 0.78 फीसदी, विटामिन सी 9 मिलीग्राम प्रति सौ ग्राम में और लोहा 31.9 मिलीग्राम प्रति सौ ग्राम में पाया जाता है.

पकने से थोड़ा पहले फलों को तोड़ कर 2 फीसदी नमक के घोल में उपचारित और

सुखा कर रखा जा सकता है. इस का इस्तेमाल अचार, जैली, चटनी, सब्जी, स्क्वैश व सिरप बनाने में किया जाता है. फलों का इस्तेमाल मिठाई और पेस्ट्री वगैरह को सजाने के लिए चेरी की जगह पर भी किया जाता है.

करौंदा को दवा के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है. इस की पत्ती का रस बुखार के इलाज के लिए और पत्तियों को रेशम के कीड़ों के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है. इस की लकड़ी का इस्तेमाल चम्मच और कंघा बनाने में होता है.

करौंदे की 4 किस्में होती हैं. हरे रंग के फलों वाली, गुलाबी रंग वाली, सफेद रंग के फलों वाली और करौंदा-1 व नरेंद्र हैं. हर किस्म का इस्तेमाल अचार व जैली बनाने में किया जाता है.

करौंदा की पौध बीज द्वारा तैयार की जाती है. लेकिन 500 पीपीएम इंडोल ब्यूटीरिक एसिड के घोल से उपचार के साथ स्टूल लेयरिंग व 10,000 पीपीएम इंडोल ब्यूटीरिक एसिड के घोल के उपचार के साथ स्टूल लेयरिंग तरीके द्वारा भी पौध तैयार की जा सकती है.

पके हुए फलों से बीजों को जुलाईअगस्त महीने में निकाल कर नर्सरी में बो देना चाहिए. अगर बीजों को स्टोर करना है तो छाया में सुखा कर या 2 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीजों में मिला कर सूखी हुई बोतलों में रखें. बीजों को ज्यादा दिन तक रखने से उन की क्वालिटी कम हो जाती है. जितनी जल्दी हो सके, उन की बोआई कर देनी चाहिए. नर्सरी में बीज जमने के बाद छोटे पौधो की खरपतवार, बीमारी और कीटों से हिफाजत करनी चाहिए. बीजू पौधे 2 साल बाद बाग में रोपने लायक हो जाते हैं.

बाड़ बनाने के लिए पौधे से पौधे की दूरी 60 सैंटीमीटर रख कर बाग के चारों तरफ लगाएं. बाग में पौधे व लाइन से लाइन की दूरी 3 मीटर रखनी चाहिए. इस तरह से एक एकड़ रकबे में 435 पौधे लगाए जा सकते हैं.

करौंदे के पौधे लगाने से एक महीना पहले फरवरीमार्च और सितंबरअक्तूबर माह में 60×60×60 सैंटीमीटर आकार के गड्ढे खोद कर उन में गोबर की खाद और मिट्टी को बराबर मात्रा में मिला कर भरें. दीमक की रोकथाम करने के लिए 30 मिलीलिटर क्लोरोपायरीफास दवा को हर गड्ढे में डालें. बाग में पौधे जुलाई से सितंबर महीने तक लगाए जाते हैं. अगर सिंचाई का सही इंतजाम हो तो फरवरी महीने में भी पौधे लगाए जा सकते हैं.

करौंदे की झाड़ी बिना खाद दिए भी अच्छी पैदावार देती है, लेकिन शुरू के सालों में नाइट्रोजन के इस्तेमाल से पौधे तेजी से बढ़ते हैं. एक पौधे में 20 किलोग्राम गोबर की सही खाद हर साल बारिश शुरू होने से पहले जून महीने में डालें. अगर सिंचाई का इंतजाम हो तो शुरू के सालों में 100 ग्राम यूरिया खाद प्रति पौधा डालनी चाहिए. नाइट्रोजन से पौधे की बढ़वार ज्यादा होती है. 3 साल बाद करौंदे को खाद की जरूरत नहीं होती.

पौधे लगाने के 2-3 साल बाद फूल आने शुरू हो जाते हैं. जुलाई से सितंबर महीने तक फल लगते हैं. जब पौधा छोटा होता है, तो शुरू के सालों में 4-5 किलोग्राम फल मिलता है. बाद में एक पौधे से 30 किलोग्राम तक फल हासिल होते हैं.

करौंदे पर लगने वाले कीट छोटे, गोल व पीले भूरे रंग के होते हैं. ये सफेद मोम जैसे चूर्णी पदार्थ से ढके होते हैं और मुलायम टहनियों और पत्तियों के नीचे चिपक कर रस चूसते हैं, इस से पेड़ों का विकास रुक जाता है. ये कीट मीठा रस भी छोड़ते हैं, जिस से पौधे पर चींटियां आ जाती हैं और फफूंदी भी लग जाती है. इन कीटों की उचित रोकथाम के लिए सही कीटनाशकों का छिड़काव करें. ■

ज्वार व बाजरे की फसल को कीड़ों से बचाएं

* संवाददाता

ज्वार और बाजरे में बीज जमाव के फौरन बाद खड़ी फसल और बालियां बनते समय कीड़ों का हमला होता है. ज्वार और बाजरे की फसल में एकजैसे ही कीड़े नुकसान पहुंचाते हैं. इन में प्ररोह मक्खी, तना बेधक, मिज मक्खी, पायरिला कीड़ा और भूरा भृंग खास कीड़े हैं.

प्ररोह मक्खी पत्तियों के नीचे अंडे देती हैं. सफेद रंग के अंडों से 2 दिनों में ही हलके पीले रंग की गिड़ार निकलती हैं, जो पौधों को अंदर ही अंदर खाती हैं. इस वजह से पत्तियों के फुटाव वाला हिस्सा सूख जाता है. अगर प्ररोह मक्खी की तादाद ज्यादा बढ़ जाती है तो एक हफ्ते तक के पौधे मर जाते हैं. 10 दिन से ज्यादा उम्र वाले पौधे पूरी तरह से नहीं मरते, मगर इन में फुटाव हो कर बहुत सी शाखाएं निकल आती हैं.

ज्वार और बाजरे पर 2 तरह के तना बेधक हमला करते हैं. ये दोनों कीट रात में ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं और इन की गिड़ार उजाले से दूर तने के भीतर रहना पसंद करती है. गिड़ार

ध्यान देने वाली कुछ जरूरी बातें

- अपने इलाके की आबोहवा के मुताबिक ही ज्यादा पैदावार देने वाली किस्मों को चुनें.
- बीज का जमाव मिट्टी जांच कर के ही बीज की मात्रा तय करें.
- एक हेक्टेयर/एकड़/बीघा में तय मात्रा में ही बीज डालें.
- ऐसी किस्मों को चुनें, जिन पर कीट व बीमारी का हमला नहीं होता हो.
- बीज को बोने से पहले सही फफूंदीनाशी या कीटनाशी से उपचारित कर के बोएं.
- किस्म कितने दिन में तैयार हो जाती है, इस की जानकारी भी रखें.
- फसल दाने के लिए या चारे के लिए लेनी है, पता होना चाहिए.
- बीजाई के समय खेत में नमी का स्तर सही होना चाहिए.
- बीज की बोआई से पहले खेत को अच्छी तरह तैयार करें और जरूरत हो तो गोबर की सड़ी खाद या केंचुआ खाद की तय मात्रा डालें.
- किसानों को हमेशा अच्छी क्वालिटी वाले बीजों की बोआई करनी चाहिए. हर राज्य सरकार द्वारा बीज निगम बनाए गए हैं. ये निगम किसानों को समय पर बढ़िया क्वालिटी वाले बीज मुहैया कराते हैं. अच्छे प्रमाणित बीजों के इस्तेमाल से देशी बीजों के मुकाबले 20–40 फीसदी पैदावार बढ़ाई जा सकती है.

इस के अलावा खेती की दूसरी जरूरी बातें भी जैसे समय पर बोआई, कीटबीमारी की रोकथाम, सिंचाई, निराईगुड़ाई, खरपतवार की रोकथाम वगैरह को भी समय पर ठीक से अंजाम देना चाहिए.

के पत्तियों को खाने से पत्तियों में छोटेछोटे छेद बन जाते हैं. छेदों से हो कर गिड़ार तने में घुस जाती है.

ज्वार और बाजरे की बालियों को मिज मक्खी काफी नुकसान पहुंचाती है. बाली बनते समय यह दानों का रस चूस लेती है. ज्यादा हमला होने पर बालियों में दाने नहीं बनते. इस कीट की गिड़ार बालियों के दानों को खाती है.

पायरिला कीड़ा पौधों का रस चूसता है और पौधे सूख कर पीले पड़ जाते हैं. इस का हमला कम बारिश के समय ज्यादा होता है.

भूरे भृंग कीड़े को कपास की ग्रेबीविल भी कहते हैं. वैसे तो यह कपास का कीट है, लेकिन ज्वार और बाजरे को भी नुकसान पहुंचाता है. इस कीट की गिड़ार पौधे की जड़ के पास जमीन में रहती है.

ज्वार और बाजरे की फसल को इन कीटों से बचाने के लिए खास बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे बरसात शुरू होने के फौरन बाद बोआई करने से शूट फ्लाई कीट का हमला कम होता है. ज्वार पर शूट फ्लाई का हमला खरीफ में देर से बोई गई फसल और रबी में जल्दी बोई गई फसल पर होता है. जहां फसलें एक के बाद एक बोई जाती हैं, वहां पर दूसरी फसल को ज्यादा नुकसान पहुंचता है. शूट फ्लाई के असर वाले पौधों को उखाड़ कर जला दें. खेत में पौधों की तादाद सही रखनी चाहिए. इस के अलावा बीज की बढ़ी हुई मात्रा के साथ कार्बोफ्यूरान की 30 किलोग्राम मात्रा प्रति हेक्टेयर को खेत में डालें.

कीटनाशी का छिड़काव सही अनुपात में करना चाहिए. शूट फ्लाई और तना बेधक के हमले से पौधे के सूखे हिस्से को निकाल देना चाहिए. ऐसा करने से कीटों की संख्या नहीं बढ़ेगी.

कीटनाशी के छिड़काव के अलावा दूसरी बातों को भी अपनाएं, जैसे ज्वार और बाजरे की ऐसी किस्मों को चुनें, जिन पर कीट व बीमारी का हमला कम होता हो. गरमी के मौसम में मिट्टी पलटने वाले हल या हैरो से गहरी जुताई कर के खेत को खुला छोड़ दें.

वजह, तेज धूप और लू चलने से कीटों के अंडे, बच्चे वगैरह खत्म हो जाएंगे. इस से मिट्टी की पानी सोखने की कूवत में इजाफा होगा. अपने इलाके की आबोहवा और मिट्टी के आधार पर ही किस्में चुनें, जिन पर कीट व बीमारी का असर कम होता है.

बीज हमेशा उपचारित कर के ही बोएं. दाने वाली फसलों के लिए खेत में पौधों की तादाद सही रखें और बोआई लाइन में करें.

इन छोटीछोटी बातों का खयाल रखेंगे, तो फसल को कीट व बीमारी से बचा सकते हैं और ज्यादा पैदावार भी ले सकते हैं. ■

नौजवान किसान ने खेती में जमाई धाक

* बृहस्पति कुमार पांडेय

आज के दौर में जहां किसान परिवारों के नौजवान खेती से दूर होते जा रहे हैं, वहीं किसान भी नहीं चाहता है कि उन का बेटा खेती में उलझ कर पैसों की तंगी झेले. यही वजह है कि छोटेबड़े समेत सभी किसान परिवारों में बच्चों को पढ़ालिखा कर ऊंचे ओहदों पर भेजने की ललक बढ़ रही है.

इस की खास वजह है खेती का पूरी तरह से व्यावसायिक न हो पाना. कृषि उपज के मूल्य निर्धारण और मार्केटिंग में सरकार की लचर नीति, मौसम की अनिश्चितता और खादबीज का संकट किसानों का खेती से मुंह मोड़ने की एक अहम वजह है, वहीं तकनीकी जानकारी की कमी भी किसानों की तरक्की में आड़े आती है. फिर भी जिन किसानों ने खेती में समय के साथ बदलाव लाने की कोशिश की, उन्होंने खुद की तरक्की तो की ही, साथ ही, दूसरे किसानों को भी तरक्की का रास्ता दिखाने के लिए आगे आए.

ऐसे ही एक 24 साला नौजवान ने पढ़ाई के साथसाथ अपने पुरखों की खेती को ऐसे संवारा कि आधुनिक खेती के लिए चर्चा का विषय बन गए.

बस्ती जिले के बहादुरपुर ब्लौक के नरायनपुर गांव के रहने वाले अनुराग पांडेय की उम्र महज 24 साल है और इन्होंने हाल ही में कौमर्स विषय में ग्रेजुएशन भी पूरा किया है. लेकिन 4 साल पहले इंटरनैट के जरीए एक कामयाब किसान की कहानी पढ़ कर अनुराग के मन में भी खेती के प्रति जो लगाव पैदा हुआ, वह आज उन के और दूसरे परिवारों की तरक्की की कहानी लिख रहे हैं.

बारबार नुकसान के बाद भी हार नहीं मानी

अनुराग पांडेय ने अपने पढ़ाई के साथसाथ खेती करने की बात जब अपने पिता को बताई, तो उन के पिता एक बार चौंके जरूर थे, लेकिन उन्हें इस बात की खुशी भी हुई कि उन का बेटा खेती में दिलचस्पी रखता है. ऐसे में पिता ने अनुराग को खेती करने के लिए आगे आने में भरपूर मदद करने का भरोसा दिया और हौसला भी बढ़ाया.

अनुराग पांडेय ने पहली बार अपने 42 बीघा खेत में से महज एक बीघा खेत में गेंदे के फूलों की खेती करने की ठानी. पिता से मिले 7,000 रुपयों से उन्होंने एक बीघा खेत में गेंदे के फूलों की पौध को रोपा. लेकिन पाले के चलते उन की पूरी फसल बरबाद हो गई.

अनुराग ने एक बार फिर से गेंदे की फसल रोपी. लेकिन सही जानकारी न होने के चलते उन्हें फिर से नुकसान उठाना पड़ा. इस बार के नुकसान से अनुराग के परिवार ने उन्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा. लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और आसपास के जिलों के कामयाब किसानों के खेतों में जा कर खेती की बारीकियों को सीखा और फिर से दोगुने जोश के साथ खेती में जुट गए.

इस बार अनुराग ने अपने खेतों में पपीते की फसल ली, लेकिन भारी बारिश के चलते पपीते की फसल को भी भारी नुकसान पहुंचा. इस के चलते लागत के 5 लाख रुपए भी डूब गए.

इस नुकसान से एकबारगी तो अनुराग का हौसला डगमगा गया था और खेती छोड़ कर फिर से पढ़ाई पर ध्यान देने का मन बनाया. लेकिन अनुराग के गांव के 35 साला नौजवान कौशलेंद्र पांडेय ने फिर से अनुराग का हौसला बढ़ाया और खेतों में केले की फसल रोपने की सलाह दी, क्योंकि कौशलेंद्र पिछले कुछ सालों से अपने खेतों में केले की खेती से अच्छा मुनाफा ले रहे थे.

अनुराग पांडेय ने जब अपने घर वालों से

फिर से खेती करने की बात बताई, तो उन के घर वाले पिछले तजरबे को देखते हुए कुछ हिचके जरूर, लेकिन अनुराग का हौसला देख कर एक बार फिर से केले की खेती के लिए आगे आने में सहयोग किया.

पत्रिकाओं और यूट्यूब से बन गई बात

अनुराग भी खेती में पिछले नुकसान को देखते हुए कोई रिस्क नहीं लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कौशलेंद्र पांडेय के बताए गए नुसखों के अलावा केले के खेती में बरती जाने वाली सावधानियां, पौधों की नई किस्में और देखभाल से जुड़ी जानकारी के लिए खेती से जुड़ी कई पत्रिकाओं और यूट्यूब का सहारा लिया. उस पर केले की खेती से जुड़ी सभी जरूरी जानकारी हासिल कर फसल की सुरक्षा की नजर से एक हेक्टेयर खेत में केले की ग्रैंड 9 प्रजाति के पौधों की रोपाई की. इस बार अनुराग ने पूरी तैयारी से केले की फसल ली थी. इस के चलते अनुराग के केले की फसल अच्छी रही और उत्पादन भी अच्छा रहा.

इस बार केले की खेती में मिली सफलता ने अनुराग का हौसला बढ़ा दिया था, इसलिए अनुराग ने सफल किसानों के खेतों में जा कर दूसरी व्यावसायिक फसलों के बारे में जानकारी ली और उन फसलों को अपने खेतों में रोपने का फैसला किया.

खेतों में लहलहा रही सब्जियों की फसल

अनुराग पांडेय केले की फसल के अलावा आलू, लहसुन, प्याज, चना, मटर धनिया, टमाटर, बैगन, शिमला मिर्च, अचार की भरवां मिर्च समेत कई फसलों को ले रहे हैं. इस बार बोई गई फसल से अनुराग को हजारों रुपए की आमदनी हुई है.

आधुनिक तकनीक का ले रहे हैं सहारा

महज 24 साल के अनुराग अपने खेतों में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग के चलते आसपास के गांवों में चर्चा का विषय बने हुए हैं. फसल की सिंचाई वे कम से कम लागत पर करते हैं. इस के लिए उन्होंने सोलर पंप के अलावा ड्रिप सिस्टम लगवा रखा है, जिस से पानी की बरबादी से भी बचाव कर पाते हैं.

इस के अलावा फसल में खरपतवार और कीड़ों से बचाव के लिए अनुराग फसल में मल्चिंग का सहारा लेते हैं. फसल की बोआई और प्रोसैसिंग के लिए वे ट्रैक्टर समेत सभी आधुनिक यंत्रों का इस्तेमाल करते हैं.

अनुराग ने जिस तरह से अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए खेती में कामयाबी पाई है, उस से उन के परिवार के लोग काफी खुश नजर आते हैं. उन के पिता वीरेंद्र पांडेय कहते हैं कि मुझे खुशी है कि मेरा बेटा खेती की विरासत को संभालने के लिए आगे आया है. उस ने खेती में आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए खेती को फायदेमंद बना कर यह साबित कर दिया है कि खेती किसी नौकरी से कम नहीं है.

वे आगे कहते हैं कि मुझे पूरा यकीन है कि अनुराग जैसे लोग अगर खेती में आगे आएं, तो खेती को बरबाद होने से बचाया जा सकता है.

युवा किसान कौशलेंद्र को मानते हैं प्रेरणास्रोत

अनुराग पांडेय अपने ही गांव के किसान कौशलेंद्र पांडेय को खेती में कामयाबी का प्रेरणास्रोत मानते हैं. 35 साल के

कौशलेंद्र पांडेय बीते कई सालों से केला, मटर, टमाटर, शिमला मिर्च, बैगन, अचार की भरवां मिर्च सहित कई तरह की फसलें ले रहे हैं, जिस से वे हर साल लाखों रुपए की आमदनी लेते हैं.

कौशलेंद्र पांडेय बताते हैं कि जब अनुराग को गेंदे और पपीते की फसल में नुकसान हो गया, तो एक बार वे निराश हो गए थे. ऐसे में अनुराग ने मेरे द्वारा की जा रही उन्नत फसल तकनीकी को न केवल समझा, बल्कि दोगुने जोश के साथ वे फिर से खेती में जुट गए. समयसमय पर खेती में आने वाली समस्याओं के निदान के लिए वे मुझ से जानकारी लेते रहते हैं, जिस का नतीजा है कि वे आज खेती में अच्छा मुनाफा ले रहे हैं.

अनुराग पांडेय के पिता वीरेंद्र पांडेय कहते हैं कि अनुराग और कौशलेंद्र जैसे युवा किसानों का खेती के प्रति रुझान और उस से मिली सफलता ने यह साबित कर दिया है कि खेती को अगर व्यावसायिक लैवल पर किया जाए, तो यह किसी दूसरे रोजगार से बेहतर है. ■

अप्रैल महीने के जरूरी काम

गन्ने की फसल में अगर नमी की कमी दिखाई दे रही है, तो सिंचाई करें. निराईगुड़ाई का काम करें. खेत में खरपतवार न पनपने दें. यूरिया वगैरह व गोबर की अच्छी तरह सड़ी हुई खाद या कंपोस्ट खाद या केंचुआ खाद खेत में जरूरत के मुताबिक डालें. जैविक खाद डालने से खेत की मिट्टी की पानी को ज्यादा समय तक रोकने की कूवत पैदा होती है. साथ ही, मिट्टी की क्वालिटी में सुधार आता है, जिस से गन्ने की ज्यादा पैदावार मिलती है. पेड़ी वाली फसल में गन्ने की सूखी पत्तियां खेत में ही फैला दें, ऐसा करने से खेत में नमी बनी रहती है. साथ ही, खरपतवारों पर भी काबू रहता है.

☛ गेहूं की फसल पूरी तरह से पक जाने पर ही कटाई करें. दानों को दांत से काटने पर अगर कट की आवाज आए तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिए. थ्रेशिंग के लिए सही मशीन का इस्तेमाल करें. गेहूं को अगर स्टोर करना है तो वैज्ञानिक तरीकों से ही स्टोर करें.

☛ मूंग की बोआई का काम 15 अप्रैल तक जरूर निबटा लें. अगर मार्च महीने में मूंग बोई गई है, तो इस महीने जरूरत के मुताबिक सिंचाई करें.

☛ चने की देर से बोई गई फसल में इस महीने दाना पड़ने लगता है. अगर इस दौरान फली छेदक कीट का हमला दिखाई दे, तो फौरन किसी अच्छी कीटनाशी दवा का छिड़काव करें. समय पर बोई गई फसल कटाई के लिए तैयार हो गई है तो कटाई करें.

☛ चारे के लिए मक्का, बाजरा व लोबिया की बोआई का काम पूरा करें. यूरिया खाद को खेत में जरूरत के मुताबिक डालें. अगर जरूरत महसूस हो, तो दूसरी खादों को संतुलित मात्रा में दें.

☛ सूरजमुखी की फसल में फूल निकलते समय निराईगुड़ाई की जरूरत होती है. ऐसे में

निराईगुड़ाई करें. खेत में नमी की कमी है, तो सिंचाई करें. यूरिया खाद को जरूरत के मुताबिक इस्तेमाल करें.

☛ करेला, लौकी की पौध तैयार हो गई है, तो करेले की रोपाई 2×1 मीटर व लौकी की 150×60 सैंटीमीटर की दूरी पर करें. अगर अभी तक करेला व लौकी की नर्सरी नहीं डाली गई है, तो फौरन नर्सरी डालें.

☛ लहसुन की फसल तैयार हो गई है, तो गांठों की सावधानी से खुदाई करें. खुदाई करने के बाद 2-3 दिन तक फसल को खेत में सुखाने के बाद फिर छाया में सुखाएं. गांठों को वैज्ञानिक तरीके से स्टोर करें.

☛ मिर्च की फसल में फली बेधक कीट की रोकथाम के लिए कारगर कीटनाशी का छिड़काव करें. एफिड कीट की रोकथाम के लिए डाईमिथोएट या मिथाइल ओडेमिटान दवा के 0.1 फीसदी वाले घोल का 2 छिड़काव 15 दिन के अंतर पर करें.

☛ बैगन की फसल में निराईगुड़ाई का काम पूरा करें. जरूरत के मुताबिक खादपानी दें. खरपतवारों को काबू में रखें.

☛ खीरा की फसल में फल मक्खी व लाल भृंग कीट की रोकथाम के लिए मैलाथियान दवा का इस्तेमाल करें. एफिड कीट की रोकथाम के लिए डाईमिथोएट दवा के 0.1 फीसदी वाले घोल का छिड़काव फायदेमंद है.

☛ अदरक की बोआई करें. बोआई के समय खेत में जरूरत के मुताबिक नमी मौजूद रहनी चाहिए, ताकि गांठों का जमाव अच्छी तरह हो सके. बोआई वाली गांठों का वजन 15-20 ग्राम होना चाहिए और बोआई से पहले गांठों को मैंकोजेब दवा से उपचारित कर लेना चाहिए. बोआई मेंड़ बना कर उन पर करें. लाइन से लाइन की दूरी 30-40 सैंटीमीटर व बीज से बीज की दूरी 20 सैंटीमीटर रखें. बोआई 5-10 सैंटीमीटर की गहराई पर करें. अपने इलाके की आबोहवा को ध्यान में रख कर ही किस्मों का चुनाव करें.

☛ आम के बागों की सिंचाई करें. बीमारी व कीट के हमले से बचाने के लिए कारगर कीटनाशी दवाओं का छिड़काव करें.

- संवाददाता ■

अंकुरित अनाज सेहत को रखे दुरुस्त

✻ डा. राकेश सिंह सेंगर एवं आलोक कुमार सिंह

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी और पोषण से भरपूर आहार न मिल पाने के चलते लोग तरहतरह की बीमारियों से ग्रसित होते चले जा रहे हैं. इस से बचने के लिए जरूरी है कि वे मोटे और पोषण से भरपूर अनाजों का सेवन करें, तो निश्चित ही उन की सेहत में काफी सुधार होगा.

आज जरूरत इस बात की है कि वे अंकुरित अनाजों को अगर अपने खाने में शामिल करते हैं, तो वे निश्चित ही सेहत के लिए काफी अच्छे साबित होंगे.

अंकुरित अनाजों को सेहत के लिए बहुत ही अच्छा माना जाता है. ये पोषक तत्त्वों से भरपूर होते हैं और इन्हें सुपर फूड यानी उत्तम खाना भी कहा जाता है. ये प्राकृतिक पौष्टिक आहार है.

अंकुरित अनाजों में कैलोरी बहुत कम होती है. ये मोटापा कम करने में मददगार होते हैं और शरीर का वजन भी नहीं बढ़ने देते हैं.

☛ इन में बहुत से प्रोटीन ऐसे होते हैं, जो शरीर को मजबूती देते हैं.

☛ ये एंटीऔक्सीडैंट विटामिन ए, बी, सी से भरपूर होते हैं, इसलिए शरीर में रोग से लड़ने की क्षमता को बढ़ाते हैं.

☛ अंकुरित अनाज पाचन तंत्र को मजबूती देते हैं. ये आंतों की क्रिया को सही करने में मददगार हैं.

☛ कैल्शियम व फास्फोरस से भरपूर होने की वजह से ये हड्डियों और दांतों को मजबूती देते हैं. खून को साफ करने में भी ये अहम रोल निभाते हैं.

☛ अगर गर्भावस्था के दौरान महिलाएं अंकुरित अनाज का सेवन करती हैं, तो नवजात शिशु को दिमागी और शारीरिक कमजोरी से बचाया जा सकता है.

☛ मधुमेह यानी डायबिटीज के मरीजों के लिए अंकुरित अनाज बहुत ही लाभकारी है. मधुमेह पीड़ितों को जरूरी है कि वे सुबह के नाश्ते में अंकुरित अनाजों का सेवन करें, तो उन्हें ज्यादा फायदा होगा.

☛ इन में विटामिन ए, बी खासतौर पर थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन, विटामिन सी की मात्रा काफी बढ़ जाती है, जिस से भोजन आसानी से पच जाता है.

☛ अंकुरित अनाज में फाइबर सौलिड ओमेगा 3 फैटी एसिड भी पाए जाते हैं, जिस से त्वचा सेहतमंद रहती है.

☛ विटामिन ए के बनने में मददगार प्रोटीन की मात्रा में भी इन से बढ़वार होती है.

☛ अनाजों को अंकुरित करने में उस में मौजूद एंजाइम की मात्रा बढ़ जाती है. इस के घटक ऐसी अवस्थाओं में पहुंच जाते हैं, जिस से शरीर में उन का अवशोषण जल्दी होने लगता है.

☛ अंकुरित मोटा अनाज यकृत रोग से सुरक्षा करता है.

☛ अंकुरित अनाज हृदय के काम करने की प्रणाली को ठीक रखते हैं, क्योंकि अंकुरित अनाज ओमेगा 3 फैटी एसिड का बड़ा जरीया हैं. इन के सेवन से सीधा हृदय को फायदा मिलता है और सेहत ठीक रहती है.

☛ इन में उच्च गुणवत्तायुक्त पोटैशियम भरपूर मात्रा में होता है. यह हाईब्लड प्रैशर को सामान्य रखता है और हार्टअटैक से भी बचाने में मददगार होता है. ■

कुछ कहती हैं तसवीरें

फूलों से कमाई. देशविदेश में फूलों की भारी मांग के चलते किसान इन्हें खूब उगाने लगे हैं और अपने आसपास की मंडी में बेचने के लिए भेज देते हैं.

यह तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई की कोयमबेडू फूलमंडी है, जहां रंगबिरंगे और किस्मकिस्म के फूल थोक में बेचे और खरीदे जाते हैं.

खेतीकिसानी की पाक्षिक पत्रिका

मात्र 499 रु. सालाना दे कर हर पखवारे
3 प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से घर बैठे मंगाएं

फार्म एन फूड

दिल्ली प्रेस की पत्रिका

साल भर में मिलेंगी 72 प्रतियां

मात्र 499 रु. में

रजिस्टर्ड डाक से

खुद पढ़ें, दूसरों को भी पढ़वाएं

फार्म एन फूड पत्रिका का ह्वाट्सएप नंबर : 08447177778

यह फार्म अपने चैक / डी.डी. के साथ भेजें

नाम: .....

पता: .....

..... पिन: .....

मोबाइल नं.: ..... फोन नं.: ..... ई-मेल: ..... WhatsApp Yes No

चैक / डी.डी. नं.: ..... तिथि: .....

DELHI PRAKASHNAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रैडिट कार्ड: ☐ अमेक्स ☐ वीसा ☐ मास्टर कार्ड ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ ☐☐☐☐ अंतिम तिथि: MM ☐☐ YY ☐☐

जारी करने वाले बैंक का नाम: _____ _____ हस्ताक्षर _____ तिथि

नियम व शर्तें:

कृपया इस फार्म को भर कर चैक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें : DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED ई-8, झंडेवाला एस्टेट, ग्राउंड फ्लोर, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. चैक/डीडी का भुगतान भारत में मान्य हो. यह विशेष योजना कुछ समय के लिए ही है. पत्रिका डिलीवरी के लिए 3-4 हफ्तों का समय दें. पत्रिका की प्रति आप को डाक द्वारा प्राप्त होगी. समस्त विवाद केवल दिल्ली न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र के अधीन है. दिल्ली प्रैस का सब्सक्रिप्शन विभाग : टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 (सभी लैंडलाइन और मोबाइल द्वारा मान्य, सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक) फोन नंबर : 011-41398888, एक्सटेंशन : 119, 221, 264 मोबाइल/एसएमएस/ह्वाट्सएप नंबर : 08588843408 फैक्स : 011-41540714/41398885, ईमेल: subscription@delhipress.in औनलाइन http://www.delhipress.in/subscribe पर भी आप सब्सक्राइब कर सकते हैं.

(REGISTERED) RNI DELHIN/ 25645/2008/DL(C)-14/1189/20-22 P.O. SRT Nagar ND-55 Posting Dt. 23 to 29, Pgs. 36 Published on 15/3/2020

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

रखे स्टमक फिट... पेट फिट...आप फिट

बिस्मथ है कारगर

एच. पायलोरी, पैप्टिक अल्सर या पेट से जुड़ी अन्य समस्याओं के लिए बाजार में मौजूद ऐंटीबायोटिक दवाएं और ऐंटासिड कुछ समय के लिए राहत तो देते हैं मगर समस्या जस की तस रहती है. स्टोमाफिट में मौजूद बिस्मथ विकार को बढ़ने से रोकने के साथसाथ उस का निदान भी करता है. इसके प्रयोग के बाद धीरेधीरे पाचन क्रिया भी सुचारु रूप से काम करने लगती है.

आस्ट्रेलिया के डॉ. बेरी जे. मार्शल को बिस्मथ के इस्तेमाल से एच. पायलोरी को जड़ से मिटाने में सफल होने की वजह से 2005 का मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला.

फायदा पहली खुराक से ही

2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

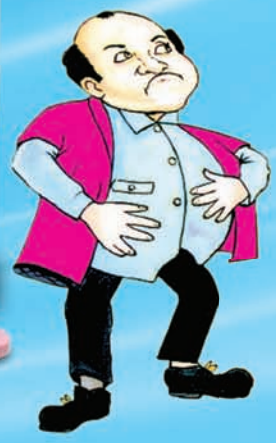

अपच गैस एसिडिटी से छुटकारा

100ml. 200ml. 450ml में उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन : 8447977889/999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999